वर्ष-15, अंक-11 वि.सं. 2076, युगाब्द 5121 जनवरी 2020 मूल्य : 20.00
सदस्यता शुल्क : संरक्षक : रु. 5000/- आजीवन : रु. 2000/- वार्षिक : रु. 200/-

मासिक पत्रिका

सेवा संवाद

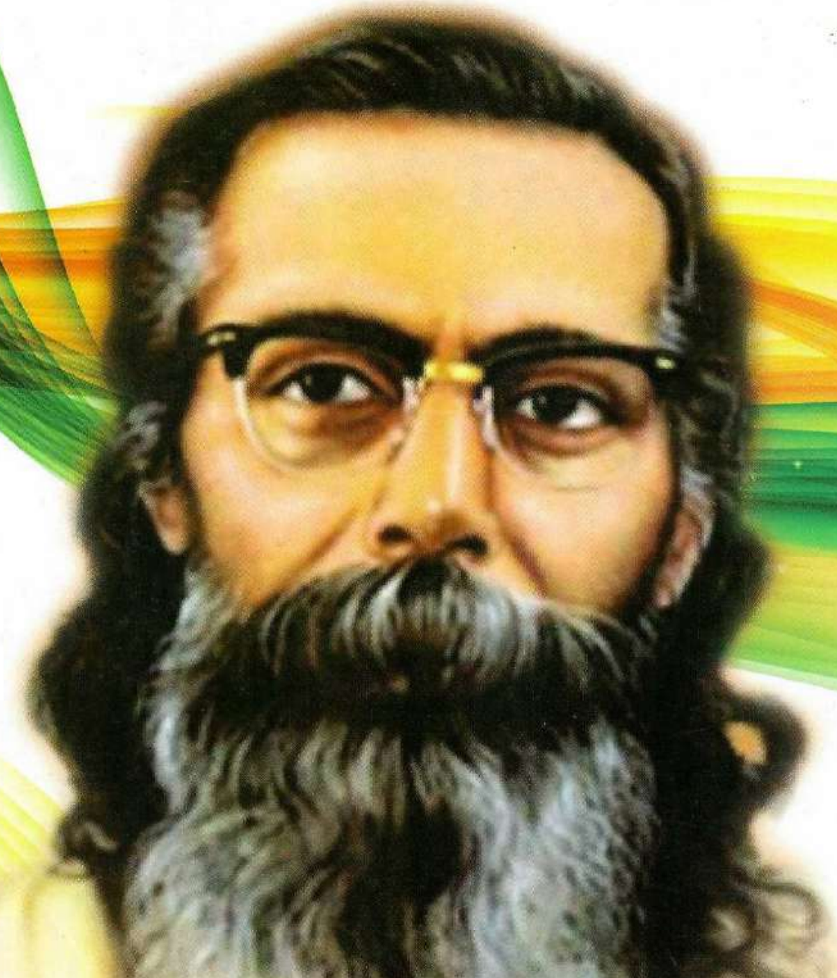

शत-शत नमन

नेत्रकुम्भ चिकित्सालय में वरिष्ठ नेत्र चिकित्सकों द्वारा नेत्र चिकित्सा

भाऊराव देवरस सेवा न्यास द्वारा प्रकाशित मासिक पत्र

सेवा संवाद

वर्ष-15, अंक-11 वि.सं. 2076, युगाब्द 5121 जनवरी 2020 मूल्य : 20.00

सदस्यता शुल्क : संरक्षक : रु. 5000/- आजीवन : रु. 2000/- वार्षिक : रु. 200/-

मार्गदर्शक

ओम प्रकाश गोयल
अध्यक्ष

राहुल सिंह
सचिव

ब्रह्मदेव शर्मा
संस्थापक न्यासी

सम्पादक
डॉ. शिवभूषण त्रिपाठी
मो. 09451176775

सह सम्पादक
राजेश
मो. 09793120738

प्रबन्धक
विजय अग्रवाल
मो. 9415020996

मुद्रक एवं प्रकाशक
जितेन्द्र कुमार अग्रवाल
मो. 9415003111

कार्यालय : भाऊराव देवरस सेवा न्यास
सी-91, निरालानगर, लखनऊ (उ.प्र.) 226020
दूरभाष : 0522-4001837, 2789406
Email : sewasamwad@gmail.com

आलोक : *प्रकाशित लेखों में व्यक्त विचार लेखकों के निजी विचार हैं।*
प्रकाशक एवं सम्पादक का उससे सहमत होना आवश्यक नहीं है।

सहयोग राशि नकद अथवा चेक/बैंक ड्राफ्ट द्वारा 'सेवा संवाद (भाऊराव देवरस सेवा न्यास)' के पक्ष में जो लखनऊ में देय हो, भेजने की कृपा करें अथवा हमारे बैंक ऑफ इण्डिया, निराला नगर, लखनऊ (IFSC : BKID0006806) के खाता सख्या 68061011000010 2 में जमा/अन्तरित करा कर कार्यालय पते पर सूचित करने की कृपा करें।

इस अंक में

1.	अपनी बात	डॉ. शिवभूषण त्रिपाठी	5
2.	आत्मावलोकन	राजेश	6
3.	लोकतंत्र की सफलता का आधार	माधव सदाशिव गोलवलकर 'श्रीगुरूजी'	7
4.	धरती बचे प्रदूषण से	संकलन	10
5.	जीवन मूल्यों की स्थापना में चलचित्र की भूमिका	कैलाश चंद्र जी	13
6.	युवा "जॉब सीकर" नहीं, "जॉब क्रिएटर" बनें	निधि त्रिपाठी	16
7.	सेवा कार्य पर आधारित धारावाहिक "समर्पण"	समाचार	17
8.	परिवार प्रबोधन वर्तमान समय की आवश्यकता है	डॉ. मोहन भागवत जी	19
9.	सेवा में हिन्दू दर्शन	डॉ. कृष्णगोपाल जी	20
10.	संकल्प से नई राह	मुकेश शर्मा	23
11.	प्यार का ज़हर	सीताराम गुप्ता	24
12.	विद्यालय बालक की तपस्थली	समाचार	25
13.	विद्यालय बालक की तपस्थली	समाचार	26
14.	निःशुल्क नेत्र चिकित्सा शिविर सम्पन्न	समाचार	27
15.	श्री कृष्ण एवं सुबल प्रसंग	शिवपूजन प्रसाद कसेरा	28
16.	आदमीयत के अभाव से अहित	के.जी. श्रीवास्तव	29

योगयुक्तो विशुद्धात्मा विजितात्मा जितेन्द्रियाः।
सर्वभूतात्मभूतत्मा कुर्वन्नपि न लिप्यते।।

"मन–बुद्धि सहित अंतःकरण की शुद्धि, मन तथा इंद्रियों को जीतना और खुद को एक देह में सीमित न मानकर व्यापाक देखना अर्थात सर्वभूतों में खुद को देखना। इस आदर्श अवस्था तक पहुंचने के लिए एक पद्धति अपनाना चाहिए कि दृष्टि आत्मशुद्धि की रहे, प्रेरणा भूतदया की रहे, कार्य पद्धति में संयम रहे और वृत्ति में अलिप्तता का वास रहे।"

अपनी बात

यह एक सामान्य धारणा है कि व्यक्ति अगर शरीर से बीमार नहीं है तो वह स्वस्थ है, परंतु वास्तव में ऐसा नहीं है। जो व्यक्ति तन से, मन से, सामाजिक रूपसे तथा आध्यात्मिक रूपसे स्वस्थ्य है, वही व्यक्ति स्वस्थ्य है। केवल बीमारी का नही होना स्वास्थ्य नहीं है।चिकित्सक आपके स्वस्थ रहने में आपकी सहासता करता है। स्वस्थ रहने की सबसे बड़ी जिम्मेदारी स्वयं आप पर है। इसमें आपका परिवार, समाज, राष्ट्र, पर्यावरण, सामाजिक समरसता मन की शान्ति,साधनों की उपलब्धता इत्यादि बहुत बड़ा योगदान है। पाश्चात्य सभ्यता के चकाचौंध से प्रभवित होकर हमने अपनी मूलभूत मान्यताओं को छोड़कर उनका अन्धाधुन्ध अनुकरण किया, जिससे स्वास्थ्य का व्यावसायिक दृष्टिकोण अधिकाधिक प्रबल होता गया, जिसका दुष्परिणाम अब हम झेल रहे है और आगे भी झेलेंगे।

शरीर स्थूल है और आत्मा सूक्ष्म। शरीर के बिना जीवन सम्भव नहीं है और आत्मा के बिना शरीर निष्प्राण है। हमारे चिन्तकों ऋषियों,मुनियों और धर्माचार्यों ने इस पर सम्यक चिन्तन किया और उन्होने स्वस्थ रहने के लिये मन और आत्मा को प्रधान व्यवस्था दी। जबकि आज के युग में हम तन और धन–प्रधान व्यवस्था पर अधिक बल दे रहे है। मन पर नियन्त्रण घटने से अशान्ति, उच्च रक्तचाप मधुमेह, दमा कैंसर इत्यादि रोगों की संख्या में काफी बढ़ोत्तरी हुई है। अक्सर हम कहते है कि तन–मन–धन से यह कार्य करना चाहिए। तन, मन और धन–तीनों स्वास्थ्य के लिए आवश्यक हैं। इन तीनों की आवश्यकता को नकारा नहीं जा सकता,परन्तु तीनो में, सबसे अधिक प्रभावकारी मन है, क्योंकि मन चंचल है और प्रकाशसे भी अधिक तीव्र गति से इधर–उधर दौड़ सकता है। मन को समझाना पड़ता है, मन को मारना (निषेध) इसका निवारण नहीं है।

कबीर दास ने मन को नियन्त्रित करने के लिये एक बहुत ही सुन्दर दोहा कहा है–

रूखा–सूखा खाइ कै, ठंडा पानी पीव।
देखि बिरानी चूपड़ी ,मत ललचावै जीव।।

यही स्वास्थ्य का मूल मन्त्र है। अक्सर हम दूसरो को देखकर अपने–आप में ही भावना पैदाकर दुःखी हो जाते हैं। व्यक्ति अपने प्रारब्ध, उपलब्ध भौतिक साधन, अपनी लगन और अपने परिश्रम से आगे बढ़ता है। प्रयत्न अवश्य ही करना चाहिए, परंतु प्रारब्ध, कर्म एंव परिस्थिति–तीनों के सम्मिश्रण से हमें जो प्राप्त होता है, उसे प्रसन्नतापूर्वक स्वीकार करना चाहिए। जो नहीं मिल सका, उसके बारे में चिन्ता कर दुःखी कदापि नही होना चाहिए। हमें उनकी ओर दृष्टि डालनी चाहिए, जिनको हमसे भी कम मिला है। तब हममें आत्मज्ञान होगा कि हम असंख्य अन्य लोगो से बहुत अधिक सुखी हैं।

व्यक्ति, समाज और राष्ट्र इस भौतिक संसार के तीन ऐसे तत्व है, जो पृथक न करने योग्य हैं तथा एक–दूसरे के पूरक है। उनके आपसी सामंजस्य एंव सम्मिश्रण में ही तीनो का कल्याण है। उनमें एक भी अगर गड़बड़ करे तो अशान्ति फैलती है एंव विकास अवरूद्ध हो सकता है। व्यक्ति जब अधिक महत्वाकांक्षी हो जाता है तो राष्ट्र और समाज को उसका दुष्परिणाम भुगतना पड़ता है। व्यक्ति अगर समाज एंव राष्ट्र की अनदेखी कर, स्वेच्छाचारी हो जाय तो उसके परिणाम भयंकर होते है। निर्दोष व्यक्ति सताये जाते हैं, मारे जाते हैं और राष्ट्र विघटन के कगार पर खड़ा हो जाता हैं एवं अन्ततः व्यक्ति स्वयं भी प्रताड़ित होता है।

व्यक्ति और समाज दोनों का स्वस्थ–विकास आवश्यक है,तभी स्वस्थ राष्ट्र का निर्माण हो सकता है। व्यक्ति की सोच में यह अंकित रहना चाहिए कि वह आज जो भी है, जिस भी स्थिति में है, इसमें राष्ट्र एंव समाज का बहुत बड़ा योगदान है और उसका जीवन इनका ऋणी है। इस ऋण को वह समाज सेवा और राष्ट्र सेवा के द्वारा ही चुका सकता है। इन्हीं सदविचारों एवं गणतन्त्र दिवस की शुभकामनाओं के साथ यह अंक आप को समर्पित है।

❑ शिव

आत्मावलोकन

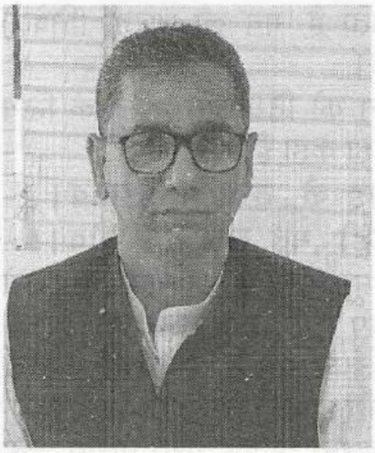

भारत को विश्व का सबसे बड़ा प्रजातान्त्रिक राष्ट्र कहा जाता है। परन्तु इसके अर्थ को समझने में कई लोग भूल कर जाते हैं। भारत पहले एक गणतांत्रिक राष्ट्र है और उसके बाद एक प्रजातान्त्रिक राष्ट्र। प्रजातंत्र की परिभाषा है जनता के लिए, जनता के द्वारा, जनता का शासन अर्थात परिभाषा के अनुसार तो शासन जनता को चलाना चाहिए, उनके नुमाइंदों को नहीं।

पाठकों को जानकर आश्चर्य होगा कि इतिहास में मात्र एक बार प्रजातान्त्रिक व्यवस्था से राष्ट्र को चलाने का प्रयास हुआ था, वह भी प्राचीन ग्रीस में जब प्रत्येक बिल, मुद्दे और निर्णय पर जनता से रायशुमारी की जाती थी। तब वहां सच्चे अर्थों में जनता का शासन था किन्तु यह व्यवस्था अधिक दिनों तक चल नहीं सकी।

आज विश्व का कोई भी राष्ट्र सम्पूर्ण रूप से प्रजातंत्र नहीं है। कहीं न कहीं प्रतिनिधियों का सहारा लेना ही पड़ता है। यदि आज विश्व में प्रजातंत्र के सबसे निकट कोई देश है तो वह है स्विट्जरलैंड। यहां सरकार केवल विधि के अनुसार देश को चलाने के लिए होती है निर्णय लेने के लिए नहीं। स्विट्जरलैंड में सरकार से संसद शक्तिशाली है जो सारे नीतिगत निर्णय लेती है।

अब एक रोचक बात, वहां संसद द्वारा पास किए गए किसी भी कानून में आम नागरिक अपना संशोधन पेश कर सकता है, यदि उसने जरुरी संख्या में हस्ताक्षर प्राप्त कर लिए हों अर्थात देश के हर नागरिक के पास देश के कानून में बदलाव का अधिकार है। यदि संविधान में कोई परिवर्तन हो रहा हो तो जनता से रायशुमारी करना आवश्यक है। नेता या सरकार जनता की ओर से निर्णय नहीं ले सकते। संविधान में परिवर्तन केवल जनता कर सकती है उसके नुमाइंदे नहीं। जो नुमाइंदे चुने जाते हैं उनके काम पर जनता की तीखी निगाहें होती हैं, इसलिए नुमाइंदे अपने काम को बड़ी ईमानदारी और अपनी पूरी क्षमता से करते हैं। इस प्रकार शासन व्यवस्था में जनता का सीधा हस्तक्षेप होता है जो अन्य किसी राष्ट्र में नहीं है।

अब हम प्रजातंत्र को भारत के सन्दर्भ में देखें। 15 अगस्त 1947 को हमारे पुरखों ने अपनी मातृभूमि को आक्रमणकारियों से स्वतंत्र करवाया था और 26 जनवरी 1950 को भारत की जनता ने संविधान की सर्वोच्च सत्ता को स्वीकार कर लिया था अर्थात हमने संविधान को अधिनायक बनाकर उसकी अधीनता को सहर्ष स्वीकार किया था। हमारे राष्ट्र गान की प्रथम पंक्तियों में हम उस अधिनायक की जय करते हैं जो भारत का भाग्य विधाता है।

यह भारत का भाग्य विधाता, अधिनायक कौन है? भारत का संविधान ही भारत का अधिनायक है जिसकी हम जय करते हैं। कितना वृहद विचार है कि हम अपने संविधान को इतना पवित्र मानकर उसकी जय करते हैं। यह संविधान ही है जो हमें लिखने और बोलने की स्वतंत्रता देता है और साथ ही साथ उसकी सीमाओं को भी बांधता है। हमारा संविधान बहुमत का आदर तो करता है किन्तु बहुमत द्वारा किसी व्यक्ति या समाज के मूलभूत अधिकारों के साथ अन्याय करने की अनुमति नहीं देता। उदाहरण लीजिए पाकिस्तानी आतंकवादी कसाब का। बहुमत के आधार पर यदि फैसले होते तो शायद कसाब को पकड़ते ही फांसी लगा दी जाती किन्तु हमारा देश प्रजातंत्र से पहले एक गणतंत्र है, जहां प्रत्येक व्यक्ति को सजा मिलने से पहले अपनी बात रखने का अधिकार संविधान द्वारा प्रदत्त है। ऐसे अनेक फैसले हैं, जो प्रजातंत्र में तुरंत लिए जा सकते हैं किन्तु हमारे प्रजातंत्र की बुनियाद बहुसंख्यकवाद नहीं है।

राजेश

लोकतंत्र की सफलता का आधार

माधव सदाशिव गोलवलकर 'श्रीगुरूजी'

सम्पूर्ण देश की रचना में हमने जो निर्णय किया है, वह है लोकतान्त्रिक व्यवस्था का। विश्व में जितने प्रकार की राज्य–व्यवस्थाएँ हैं, उनमें सबसे कम खराब इस व्यवस्था को माना गया है। सम्पूर्ण जनता को इस व्यवस्था में प्रतिनिधित्व प्राप्त होता है। परन्तु इस व्यवस्था की सफलता के लिए यह आवश्यक है कि सर्वसामान्य समाज सुशिक्षित हो। केवल सुशिक्षित ही नहीं, उसे अर्थनीति, राजनीति, अन्तर्राष्ट्रीय सम्बन्धों को जानकारी आदि बातें भी अच्छी प्रकार से विदित होनी चाहिए। इस प्रकार शिक्षित और जानकार समाज ही अपने योग्य प्रतिनिधि चुनने में समर्थ हो सकता है। यदि ऐसा ही नहीं हुआ और सर्वसामान्य समाज अशिक्षित तथा जानकारी विहीन रहा तो वह किसी स्वार्थ और प्रलोभन के प्रभाव में आकर अयोग्य व्यक्ति को अपना प्रतिनिधि चुन सकता है। फिर पांच साल तक पछताता रहता है कि हमने आखिर यह क्या किया?

व्यावसायिक प्रतिनिधित्व

प्रजातंत्र के ढाँचे में इस प्रकार कठिनाइयाँ आती हैं। इनमें से किस प्रकार रास्ता निकल सकता है? इस सम्बन्ध में यह विचार सामने आता है कि आजकल सर्वसामान्य और जनगणना के अनुसार जनसंख्या को आधार मानकर क्षेत्रीय प्रतिनिधि चुनने की जो प्रणाली है, उसे वैसा ही बनाए रखकर उसके साथ–साथ उद्योग–धंधों के प्रतिनिधित्व चुन लिए जाएँ, उन कार्यों को करने वाले समूहों से अलग–अलग प्रतिनिधि चुन लिए जाएँ। इस प्रकार अन्य सब काम–धंधों का वर्गीकरण कर प्रतिनिधित्व कराया जाए। अंग्रेजी में इसे 'फंक्शलन रिप्रेजेन्टेशन' (व्यावसायिक प्रतिनिधित्व) कहा है। विश्व के कुछ देशों में यह लागू भी है। आजकल की चुनाव–पद्धति के साथ ही यदि इसे जोड़ दिया जाए तो जिस प्रकार गैर–जानकार लोगों की सभा बनती है और राज्य–संचालन का दायित्व ग्रहण करती है, उसमें कुछ जानकार लोग भी रहेंगे। वे आवश्यकता पड़ने पर उस विषय से सम्बन्धित मौलिक विचार दे सकेंगे।

यह प्रणाली अपने देश के लोगों को भली–भांति ज्ञात भी है। पुराने समय से हमारी रचना ग्राम–पंचायतों पर निर्भर रही है। वे पंचायतें ही आगे बढ़कर राजा की अष्टप्रधान–समिति के रूप में योग्य सलाह देने का कार्य करती रही हैं। ये पंचायतें भी उद्योग–धंधों पर आधारित रही थीं। पुराने समय में आज जैसा बहुत उलझा हुआ जीवन नहीं रहता था। सादा जीवन था। उनमें चार प्रमुख उद्योग स्वीकार कर लिए गये थे। एक कार्य माना गया उनका, जो विचार करने, पढ़ने–पढ़ाने और धर्म–प्रसार वगैरह करने वाले थे। दूसरे, राज्य की रक्षा करने का दायित्व पूर्ण करने वाले थे। तीसरे, व्यापारी और चौथे में खेती–बाड़ी जैसे अन्य कार्य करने वाले लोग आते थे पाँचवा कार्य उनका माना गया, जो वनों और पहाड़ों पर निर्भर तथा शिकार आदि पर जीवन यापन करते थे। इस प्रकार इन चार वर्णों के चार प्रतिनिधि और पाँचवाँ, जिसे हमारे यहाँ 'निशाद' कहा गया है–ऐसे पाँचों मिलकर समाज का पूर्ण प्रतिनिधित्व करते थे।

कहने को तो आज भी पंचायती राज्य की बातें की जाती हैं, परन्तु लक्ष्य ठीक न होने के कारण उनकी रचना में गड़बड़ी हो गई हैं। यहां तक कि अपने देश के एक बड़े पुराने नेता ने मुझे एक बार कहा था कि पंचायती राज्य बनाने की जो बातें चल रही हैं, वे तो बड़ी उलझन पैदा करने वाली हैं। वे बोले कि देखो, पुरानी बातें छोड़ दो। आजकल गुटबाजी, जातिवाद और उनके आधार पर झगड़े चारों ओर चल रहे हैं। गाँवों में भी यह जोरों पर हैं। इस स्थिति में, गाँवों में जो नामी गुण्डे हैं, वे पंच चुन जाएंगे। सबको मार–पीटकर डरा–धमाकाकर वे पंचायत में आ धमकेंगे। गाँव–गाँव में यह हमारे लिए बड़ी कठिनाई हो जायगी।

पंचायतों की रचना में सुधार

उनके इस कथन में कितनी सच्चाई है, सह अनुभव करने की बात हैं। फिर भी इस दोष को निकालकर प्रयोग करने की आवश्यकता है। जो अच्छे और सद्भावना–सम्पन्त्र व्यक्ति है, जिन्हें

सबके प्रति प्रेम है, ऐसे व्यक्तियों को अपने–अपने काम–धंधों के प्रतिनिधि बनकर एकत्रित होना और उनके अनुभवों के आधार पर प्राप्त निर्णयों से शासन चलाना योग्य होगा। इससे गाँव का नियंत्रण और रक्षा हो सकेगी। इस प्रयोग को सफल कर इसकी क्षेत्र–मर्यादा बढ़ाई जा सकती है।

सम्पूर्ण देश की व्यवस्था के लिए इस प्रकार की नींव लाभदायी सिद्ध होगी। इस नींव को मजबूत बनाने के अनुरूप ही चुनाव तंत्र स्वीकार किया जाए, संविधान भी इसी आधार पर बने। पूरी तरह प्रयत्न किए जाएँ तो हो सकता है कि राज्य–व्यवस्था में कुछ अधिक सुसूत्रता, सभी लोगों की आवश्यकताओं को पहचानकर आपस का अधिकाधिक सामंजस्य स्थापित करने का विचार प्रबल हो। एक बात पक्की है कि ऐसा प्रयोग करने लायक अवश्य हैं। यद्यपि प्रयोग कोई भी हो, पूर्ण कदापि नहीं होता। इसलिए विचार ऐसा ही करना पड़ता है कि जो अधिकाधिक लाभदायी और कम से कम हानिकारक हो, वही किया जाए।

दूसरा भी विचार अर्थनीति के सम्बन्ध में आजकल बहुत प्रचलित है। अपनी भारतीय प्रणाली में जिसे 'अर्थशास्त्र' कहते हैं उसमें आज जैसा केवल आर्थिक पहलू मात्र नहीं था। हमारे यहाँ अर्थशास्त्र का ही दूसरा नाम 'नीतिशास्त्र' था। नीति, जिसे आजकल रामनीति तक ही सीमित मानते हैं, हमारे यहाँ अर्थशास्त्र को भी अपने अन्दर समाविष्ट करती थी, परन्तु आजकल आर्थिक पहलू पर अधिक जोर दिया जा रहा है। उसमें समाजवाद का उल्लेख किया जाता है।

समाजवाद के कई पहलू बताये जाते हैं। ये पहलू इतने हैं कि इसकी मूल व्याख्या ही समझ पाना कठिन है। गिल्ड सोशलिज्म, अनार्किज्म, सिंडीकेटिज्म, कम्युनिज्म आदि कितने ही इसके पहलू गिनाये जाते हैं। जो हो, 'समाजवाद' शब्द की गुलामी स्वीकार न करते हुए अपने मौलिक चिन्तनपूर्ण भारतीय सिद्धान्त के आधार पर इस आर्थिक रचना का विचार भी हम कर सकते हैं। इसमें यदि कोई विचारणीय पहलू है, और उसे यदि हम अपने सिद्धान्त को आधार देकर चला सकते हैं, तो हम अवश्य चलाएँ। उसमें कोई आपत्ति नहीं है।

विकेन्द्रीकरण बनाम केन्द्रीकरण

विचार किया तो हमें चलेगा कि जिसे समाजवाद का सिद्धान्त कहा जाता है, उसमें मूल विचारणीय बात केवल इतनी है कि सम्पति का विकेन्द्रीकरण होना चाहिए। साथ ही उसमें यह भी कहा जाता है कि यह विकेन्द्रीकरण न्यायपूर्ण होना चाहिए। इस विचार में जो मतभेद और झगड़े दिखाई पड़ते हैं, वे सब इस बात में से उत्पन्न हैं कि इस विकेन्द्रीकरण को न्यायपूर्ण बनाने का अधिकार किसे सौंपा जाए? आजकल इस पर बड़ा जोर है कि इस विकेन्द्रीकरण के लिए केन्द्रीकरण की जरूरत है। अनेक केन्द्रों के स्थान पर, सत्ता–केन्द्र के हाथों में सब सौंप दिया जाए। राजसत्ता को ही एकमेव प्रभावी केन्द्र मान लिया जाए। यह विचार अपने देश में आजकल बहुत प्रचारित किया जा रहा है कि सत्ता द्वारा सम्पत्ति अब अपने हाथों में ले ली जानी चाहिए। सम्पत्ति निर्माण होने के जितने साधन हैं, उन पर भी राजसत्ता का एकाधिकार कायम होना चाहिए। इस प्रकार यदि हुआ, तो सत्ता प्रभावी होगी ओर भोष समाज उस राज्य–सत्ता के आश्रम में नौकर बना काम करता रहेगा। सत्ता जितना, जैसा, जब जहाँ वितरण करेगी, उसे लोगों को स्वीकार करना होगा। जो भी न्यूनतम वेतन सत्ता द्वारा निर्धारित होगा, उस पर भोष समाज के लोगों को चलना होगा।

तब समाजवाद की इस विचारधारा में जो मूल विचारणीय बात भोष रह जाती है, वह यह है कि सम्पति का विचारणीय बात भोष रह जाती है, वह यह है कि सम्पति का विकेन्द्रीकरण होना चाहिए। इस पर हमें अपने ढंग से विचार करना होगा।

भारतीय संकल्पना

अब यह बात आजकल जरूर बड़ी विचित्र है कि हम लोग अपने ढंग से विचार करने के लिए कम तैयार हैं। बाहर से जो और जैसा पका–पकाया मिले, उसे ही चबाने और तारीफ करने की प्रवृत्ति अधिक है। ऐसा साहस और स्वाभिमान रहना जरूरी है कि हम दुनिया भर के विचार–प्रवाहों को परखेंगे तथा अपनी स्वतंत्र मौलिक राष्ट्रीय चिंतनधारा के अनुरूप अपना रास्ता अपनाएंगे।

एक संतुलित विचार कर सकते हैं। हम पाते हैं

कि ऐसी आर्थिक रचना, जिसमें व्यक्ति की प्रेरणा भी बनी रहे और साथ ही सम्पत्ति का विकेन्द्रीकरण भी पर्याप्त मात्रा में होता रहे, वही प्रगति की ओर अग्रसर करने में सहायक हो सकती है। हमें अपने देश की परम्परा से प्राप्त विचारधारा के आधार पर ही इस प्रकार का कोई मार्ग निकालना होगा।

एक बात तो साफ है कि उत्पादन के साधनों के क्षेत्र में मनमानी नहीं चल सकती। तथाकथित व्यक्ति–स्वातंन्त्र के नाम पर चाहे जो जिस प्रकार से कमाये और चाहे जिस प्रकार से उपभोग करे–ऐसी छूट नहीं दी जा सकती। व्यक्ति–स्वातंन्त्र को इतने संकुचित अर्थ में समझने और समझाने के दिन अब नहीं रहे। इनके फिर से आने की संभावना भी नहीं है, और फिर आने भी नहीं चाहिए, क्योंकि व्यक्ति–स्वातंन्त्र के विचार में ही यह बात निहित है कि अपनी स्वतंत्रता अपने साथ रहने बाले समाजबन्धुओं द्वारा मर्यादित है। जो सबको मान्य हो और हितकार हो, उसी मर्यादा के अन्दर अपनी स्वतंत्रता का उपभोग प्रत्येक व्यक्ति को करना होगा। स्वेच्छाचारिता के ढंग से चाहे जैसा उपभोग करते रहने की अनुमति उसे नहीं दी जा सकती।

समुचित दृष्टिकोण

प्रश्न यह उपस्थित होता है कि इसके लिए व्यक्ति पर नियंत्रण किस प्रकार हो? जो लोग उत्पादन और वितरण व्यवस्था के जानकार हैं, वे इस संबंध में विचार करें। अपने इस हिंदू अधिष्ठान को न छोड़ते हुए के सम्पूर्ण समष्टि की एक चेतना है और मनुष्य केवल ऐसा दो हाथ पैर वाला सामान्य पशु नहीं है, जिसका मुल्यांकन केवल इतना ही हो कि उसे जीने के लिए खाना, वस्त्र, मकान चाहिए और कुछ उपभोग चाहिए। वस्तुतः, मानव–विकास की दिशा सांसारिकता से ऊपर उठाकर आध्यात्मिकता है। उसके अन्दर चिरन्तन चेतना है, उसे केवल कुछ ऐशो–आराम करने तक ही सीमित नहीं माना जा सकता। मनुष्य का जीवन लक्ष्य तथा सुख, सबमें व्याप्त उस चिरंतर अस्तित्व के साथ समरस होने में निहित है। जिसकी ओर बढ़ने में किसी प्रकार के बंधन और कोई अड़चन आड़े नहीं आनी चाहिए यह बात ध्यान में रखकर यदि हम मनुष्य की स्वभावगत प्रेरणा का समुचित ध्यान रखें, संपत्ति के विकेन्द्रीकरण और उपभोगता की सीमा पर कोई व्सवस्था निर्धारित करें, तो वह लाभदायक होगी।

यह व्यवस्था क्या हो और उसका स्वरूप क्या रहे? इस सम्बन्ध में जब हम विचार करते है तो हमें दो बातें स्पष्ट दिखाई देती हैं। पहली तो यह कि कोई व्यक्ति अपने आप अकेले ही इस व्यवस्था सम्बन्धी कोई कार्यवाही करना चाहे तो वह चलेगी नहीं, क्योंकि समाज के नाते कार्यवाही होने का यह क्षेत्र है। दूसरी बात यह है कि हमारे पास अपने हिन्दू–जीवन सिद्धान्त तो हैं, परन्तु उन्हें व्यवहार में उतारने का माध्यम आज ओझल हैं। सम्पत्ति के विकेन्द्रीकरण, न्यायपूर्ण ढंग से वितरण के लिए प्राचीन काल में हमारे यहां जो जो व्यवस्था थी, वह आज टूट चुकी है। उसे पुनः विद्यमान होने की संभावना भी अब नहीं है। इस स्थिति में कम्युनिस्ट विचारधारा में मनुष्य को राज्यसत्ता के मशीन का निर्जीव पुर्जा मानकर व्यवस्था का जो स्वरूप निर्धारित किया गया है, वह एक जातिगत विचार बनकर सामने आता है। लोग कहते हैं कि इसे अपनाने के लिए अपने राष्ट्रीय सिद्धान्तों को छोड़ दो। हम पहले यह विचार कर चुके हैं कि मानव मूल्यांकन के समष्टि–चेतनारत परस्पर सामन्जस्य के जो सिद्धान्त हिन्दू–समाज की विशेषता हैं उन्हें त्याग देने से न तो हमारा राष्ट्रीय अस्तित्व सुरक्षित रहता है और न ही विश्व की मानवता को भारत की अनुपम देन का ही पालन होता है। इसलिए हमें किसी भी स्थिति में अपने राष्ट्रीय जीवन सिद्धान्तों से डिगना नहीं है। यह तय कर लेने पर आज जो प्रचलित पद्धतियां हैं उन्हीं के गुण–दोषों का अध्ययन कर हमें रास्ता खोज निकालना चाहिए।

हम चाहे जो पद्धति स्वीकार करें, सबकी सफलता इस पर निर्भर करती है कि उसे कार्यान्वित करने वाले लोग कैसे हैं ? समाजसेवी, उत्साही और चरित्रवान लोग हों, तो किसी भी पद्धति से हितकारी परिणाम निकल सकते हैं। इसके विपरीत यदि व्यक्ति ठीक नहीं, तो अच्छी से अच्छी व्यवस्था भी असफल हो जाती है। इसलिए मनुष्य निर्माण का

कार्य, पद्धतियों के इन सब वाद–विवादों के बीच अकाट्य आवश्यकता के नाते उभरकर सामने आ खड़ा होता है।

व्यक्ति निर्माण आवश्यकता

उदाहरण के लिए मान लो कि सब सम्पति पर हम राज्य के स्वामित्व की पद्धति को ही स्वीकार कर लें। व्यक्ति–समूहों को समस्त धन राज्य द्वारा अधिग्रहीत कर लिया जाए और राज्य का प्रशासन–तंत्र उसके ठीक–ठीक वितरण की जिम्मेदारी को वहन करें। तो भी अपने सामने यह प्रश्न आयेगा कि वह राज्य तंत्र किन हाथों में रहे ? राज्य की बागडोर संभालेंगे। यह व्यक्ति यदि चरित्रहीन और स्वार्थी हों, यदि ऐसे व्यक्ति राज्यसत्ता का संचालन करने वाले हों, जो राष्ट्र और समाज के नुकसान की व्यक्ति अथवा पार्टी के स्वार्थों के सामने चिन्ता न करें, तो क्या काम बन सकेगा? निष्कर्ष निकलता है कि व्यक्तियों को शिक्षित करने का कार्य हुए बिना कोई पद्धति काम नहीं कर सकेगी। जनसाधारण को शिक्षित करना और उनके द्वारा चुने गये योग्य व्यक्तियों को राष्ट्रहितकारी कार्यों में संलग्न बनाये रखने के लिए सामाजिक स्थिति तैयार करना, प्रत्येक परिस्थिति और पद्धति में आवश्यक महत्व रखता है। इतने व्यापक दृढ़ता के साथ अन्य कोई नहीं कर रहा है। देश में जो कुछ अल्प प्रयत्न हो रहे हैं, वे अपने कार्य के माध्यम से ही हो रहे हैं। इस कार्य को अधिकाधिक फैलाने के लिए हम प्रयत्नशील हों।

धरती बचे प्रदूषण से

राख, फूल, कूड़े–कचरे से, नदी रहे हम पाट।
घोर गंदगी, दुर्गंधों से, सिसक रहे हैं घाट।
जलकुंभी है, दूषित जल है, पावनता का नाम नहीं
नदी सफाई अभियानों की, खड़ी हो गई खाट।

आओ हम संकल्प करें, धरती बचे प्रदूषण से।
विकसित नए प्रकल्प करें, धरती बचे प्रदूषण से।
सभी प्राणियों को मिल जाए, प्राणवायु, जल, खाद्य सदा,
वाहन–सेवा अल्प करें, धरती बचे प्रदूषण से।

रिक्त जगह पर पौध लगाकर, धरती का श्रृंगार करें।
पर्यावरण को शुद्ध बनाकर, धरती का श्रृंगार करें।
स्वच्छ बनाएं गाँव – शहर, घर, नाली, नाले, नदियों को,
हरियाली का क्षेत्र बढ़ाकर, धरती का श्रृंगार करें।

गौरीशंकर वैश्य विनम्र
117–आदिलनगर, विकासनगर
लखनऊ 226022
दूरभाष – 09956087585

नेत्र कुम्भ चिकित्सालय

सी-136, निराला नगर, लखनऊ

संचालन : किंगजार्ज चिकित्सा विश्वविद्यालय एवं अन्त्योदय हेल्थ मिशन 1 अप्रैल 2019 से 30 नवम्बर 2019 तक लाभान्वित रोगी विवरण

	माह अक्टूबर 2019 तक	माह नवम्बर 2019	योग सत्र 19–20
नेत्र परीक्षण	2738	370	3108
चश्मा वितरण	1615	206	1821
मोतियाबिन्दु आपरेशन	53	06	59
पैथॉलॉजी	26	65	91

आलोक :–नेत्र एवं पैथॉलाजिकल जॉच केवल 20/– के पंजीकरण शुल्क में उपलब्ध है।

भाऊराव देवरस सेवा न्यास स्वास्थ्य सेवा प्रकल्प

(अ) सुदूर ग्रामीण अंचल एवं शहरी क्षेत्र की 6 सेवा बस्तियों में स्वास्थ्य केन्द्रों का संचालन

1 अप्रैल 2019 से 30 नवम्बर 2019 तक लाभान्वित रोगी विवरण

क्र.	सेवा केन्द्र	दिवस	माह सितम्बर 2019 तक में लाभान्वित रोगी	माह अक्टूबर 2019 में लाभान्वित रोगी	कुल लाभान्वित रोगी
1.	वेदान्त आश्रम, पपनामऊ	सोमवार	394	51	445
2.	सेवा समर्पण संस्थान बिन्दौवा	मंगलवार	1257	138	1395
3.	अम्बेदकरनगर	बुधवार	483	91	574
4.	51 शक्तिपीठ (बीकेटी)	गुरुवार	409	34	443
5.	अर्जुनपुर (बीकेटी)	शुक्रवार	00	00	00
6.	माधव सेवा आश्रम	शनिवार	267	40	307
	कुल लाभान्वित रोगी		**2810**	**354**	**3164**

(ब) माधवराव देवड़े स्मृति रुग्ण सेवा केन्द्र, सी-91, निरालानगर, लखनऊ

1.	एलोपैथिक	प्रत्येक कार्यदिवस	5907	1091	6998
2.	होम्योपैथिक	प्रत्येक कार्यदिवस	3545	593	4138
	कुल लाभान्वित रोगी संख्या		**9452**	**1684**	**11136**

(स) रुग्ण सेवा केन्द्र, माधव सेवा आश्रम, लखनऊ

1.	होम्योपैथिक	प्रत्येक कार्यदिवस	2364	311	**2675**

1 अप्रैल 2019 से 30 नवम्बर 2019 तक कुल लाभान्वित रोगी सं. 16975

माधव सेवा आश्रम रायबरेली रोड, लखनऊ में प्रान्तशः ठहरने वाले लाभान्वित बन्धुओं की संख्या

क्र.	सेवा केन्द्र	माह सितम्बर 2019 तक	माह अक्टूबर 2019 में	योग सत्र 19–20
1.	उत्तर प्रदेश	39636	6637	46273
2.	उत्तराखण्ड	302	60	362
3.	बिहार	27566	2987	30553
4.	झारखण्ड	3623	278	3701
5.	उड़ीसा	415	42	457
6.	मध्य प्रदेश	2233	287	2520
7.	छत्तीसगढ़	356	87	443
8.	राजस्थान/गुजरात	103	06	109
9.	महाराष्ट्र	127	132	259
10.	नेपाल	480	46	526
11.	दिल्ली/पंजाब/हरियाणा	85	79	164
12.	पश्चिम बंगाल	682	70	752
13.	अन्य प्रान्त	624	22	646
	योग	**76232**	**10733**	**86965**

एम्स पावर ग्रिड विश्राम सदन
सफदरजंग, नई दिल्ली में प्रान्तशः ठहरने वाले लाभार्थियों की संख्या
1 अप्रैल 2019 से 30 नवम्बर 2019 तक

भारतीय राज्य/देश	अक्टूबर 2019 तक	नवम्बर 2019	कुल योग 2019–20
बिहार	2559	299	**2858**
उत्तर प्रदेश	2145	317	**2462**
मध्य प्रदेश	464	88	**552**
झारखण्ड	387	47	**434**
राजस्थान	314	48	**362**
पश्चिम बंगाल	300	38	**338**
उत्ताराखण्ड	327	41	**368**
हरियाणा	191	19	**210**
नेपाल	252	22	**274**
उड़ीसा	83	08	**91**
जम्मू और कश्मीर	126	14	**140**
छत्तीसगढ़	31	07	**38**
असम	48	13	**61**
गुजरात	14	03	**17**
हिमाचल प्रदेश	13	03	**16**
महाराष्ट्र	13	02	**15**
दिल्ली	29	00	**29**
त्रिपुरा	24	03	**27**
पंजाब	17	01	**18**
मनीपुर	03	00	**03**
अरुणाचल प्रदेश	08	03	**11**
आंध्र प्रदेश	00	00	**00**
चंडीगढ़	00	00	**00**
केरल	22	00	**22**
सिक्किम	07	02	**09**
तेलंगाना	00	00	**00**
बांग्लादेश	00	00	**00**
तमिलनंडु	19	04	**23**
अफ़ग़ानिस्तान	00	00	**00**
मिजोरम	02	00	**02**
कुल	**7398**	**982**	**8380**

राज्यानुसार एम्स पावर ग्रिड विश्राम सदन पटना, बिहार में प्रान्तशः ठहरने वाले लाभार्थियों की संख्या
नवम्बर 2019 से

भारतीय राज्य/देश	नवम्बर 2019 में
बिहार	1046
उत्तरप्रदेश	10
मध्य प्रदेश	00
झारखण्ड	16
राजस्थान	00
पश्चिमबंगाल	00
उत्ताराखण्ड	00
हरियाणा	00
नेपाल	06
उड़ीसा	00
जम्मूऔरकश्मीर	00
छत्तीसगढ़	00
असम	00
गुजरात	00
हिमाचलप्रदेश	00
महाराष्ट्र	00
दिल्ली	00
त्रिपुरा	00
पंजाब	00
मनीपुर	00
अरुणाचलप्रदेश	00
आंध्रप्रदेश	00
चंडीगढ़	00
केरल	00
सिक्किम	00
तेलंगाना	00
बांग्लादेश	00
तमिलनंडु	00
अफ़ग़ानिस्तान	00
मिजोरम	00
कुल	**1078**

समाचार

जीवन मूल्यों की स्थापना में चलचित्र की भूमिका

कैलाश चंद्र जी

भारतीय चित्र साधना द्वारा भैयाजी दाणी न्यास, इंदौर के तत्वाधान में उज्जैन में पहले शॉर्ट फिल्म फेस्टिवल का आयोजन, 24–25 नवंबर, 2019 इंदौर, राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ मध्य क्षेत्र के सह प्रचार प्रमुख कैलाश चंद्र जी ने कहा कि कला साधना के विभिन्न क्षेत्रों में से एक चलचित्र विधा की भारतीय मूल्यों की अभिव्यक्ति में सशक्त भूमिका रही है। लेकिन, पिछले 30 –40 वर्षों में सुनियोजित तरीके से हमारी सनातन परंपरा के प्रतिकूल नकारात्मक विघटनकारी दृश्यों व पटकथा को आधार बनाया गया, जिस कारण इन माध्यमों से वांछित रचनात्मक परिणाम प्राप्त नहीं हो सके। हम सब जानते हैं कि इससे पहले चलचित्रों का प्रारंभ हिन्दू देवी–देवताओं की प्रतिमा, स्तुति, मंत्र आदि से होता था जो बाद में लूट, डकैत, हत्या आदि से प्रारंभ होने लगा और फिर पूरी कहानी उसी नकारात्मकता के आसपास चल कर समाप्त होती थी। भारतीय चित्र साधना चलचित्रों के द्वारा समाज जीवन में भारतीय मूल्यों की स्थापना, राष्ट्रीय चरित्रपूर्ण संदेश आदि के प्रचार प्रसार के लिए कृत संकल्पित है।

वे भारतीय चित्र साधना के तत्वाधान में श्री भैयाजी दाणी न्यास इंदौर द्वारा विक्रम कीर्ति मंदिर उज्जैन में आयोजित दो दिवसीय उज्जयिनी शॉर्ट फिल्म फेस्टिवल के उद्घाटन सत्र में मुख्य वक्ता के रूप में संबोधित कर रहे थे।

कार्यक्रम का शुभारंभ भारत माता के चित्र के समक्ष दीप प्रज्ज्वलन के साथ हुआ। उद्घाटन सत्र की अध्यक्षता राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ मध्य क्षेत्र के संघचालक अशोक जी ने की। उन्होंने उज्जयिनी के प्राचीन महत्व को रेखांकित करते हुए भगवान महाकाल और भगवान श्री कृष्ण के प्रेरणादायी जीवन का उल्लेख किया व समारोह की सार्थकता हेतु शुभकामनाएं दीं। साथ ही कला के विभिन्न क्षेत्रों के साधकों से समाज निर्माण में सकारात्मक मूल्यों की स्थापना हेतु आह्वान किया।

समारोह के प्रथम दिवस तीन सत्रों में लगभग 100 शॉर्ट फिल्मों में से प्रीज्यूरी द्वारा मूल्यांकन के पश्चात् चयनित फिक्शन एवं नॉन फिक्शन श्रेणी की 30 शॉर्ट फिल्मों की स्क्रीनिंग की गई। जिनमें सामाजिक समरसता, शौर्य, सामाजिक चुनौतियां, पर्यावरण संरक्षण, नारी सम्मान आदि विषयों को दर्शाया गया। इन सत्रों के मध्यांतर में लोक गायकों द्वारा कबीर भजन, संगीत बैंड द्वारा गीतों की मधुर धुनों को प्रस्तुत किया गया। मुंबई से आए फिल्म निर्माता राजेश राठी ने सुधी श्रोताओं से 'दृश्य माध्यमों में नई संभावनाएं' विषय पर चर्चा की। प्रथम दिवस के समापन में सांस्कृतिक संध्या के अंतर्गत स्थानीय कलाकारों एवं संस्थाओं मालवा कला केंद्र, प्रतिकल्पा और निनाद संस्था द्वारा महाकाल स्तुति, संजा माता, ग्वालन टोली लोक सांस्कृतिक विषयों पर नृत्य प्रस्तुत किए गए। कार्यक्रम का संचालन डॉ. विनोद गुप्ता ने किया।

सदस्यता शुल्क

पुनश्चः, जिन बन्धुओं की वार्षिक सदस्यता शुल्क देय हो गये हैं तथा जो आजीवन ग्राहक बनना चाहते हैं उन सभी से प्रार्थना है कि अपेक्षित शुल्क भेज कर हमें अनुगृहीत करें।

सेवा संवाद

ग्राहक सदस्यता प्रपत्र

सेवा में,

प्रबन्धक,
'सेवा संवाद'
भाऊराव देवरस सेवा न्यास
सी–91, निरालानगर, लखनऊ–226020

महोदय,

मैं/हमारी संस्था आपकी मासिक पत्रिका सेवा संवाद का वार्षिक जीवन सदस्य बनने का इच्छुक हूँ/है। इस निमित्त वार्षिक शुल्क 200/– अथवा आजीवन शुल्क 2000/– रुपये **'सेवा संवाद'** के पक्ष में नकद/बैंक ड्राफ्ट/चेक सं. .... दिनांक........................ बैंक......................................द्वारा भेज रहा हूँ/रही है। कृपया स्वीकारें। प्राप्ति की रसीद तथा पत्रिका हमारे निम्न पते पर प्रेषित करने की कृपा करें।

ह0 आवेदक

हमारा पता है :

नाम : ....

पता : ....

जिला : ....

प्रदेश : ....

मोबाइल : ....

आलोक : चेक/ड्राफ्ट 'सेवा संवाद' के पक्ष में जारी करें अथवा बैंक ऑफ इण्डिया, निरालानगर, लखनऊ के खाता सं. 680610110000102(IFSC: BKID0006806) में सीधे जमा कर जमा पर्ची की छायाप्रति के साथ सूचित करें।

आप भी लिखें

सेवा संवाद के आप सुधी पाठक हैं, आपके विचार, सुझाव हमारे लिए सदैव प्रेरणादायी रहे हैं। सेवा सम्बन्धी आलेख, सेवा के प्रेरक प्रसंग, सेवा कार्य के उल्लेखनीय व्यक्तित्व, सेवा सस्थानों का परिचय एवं उनके कार्य, सेवा को प्रोत्साहित करने वाली घटनाएं, काव्य–गीत, कथा–कहानी आदि विषयों पर सामग्री प्रकाशित करना हमारा उद्देश्य हैं। अस्तु आप से प्रार्थना है कि हमारी सीमाओं को ध्यान में रखते हुए अपना आलेख एक पेज में चित्र सहित टाइप किया वर्ड फाईल (**World File**) में भेजकर हमारा सहयोग करने का कष्ट करें। प्रत्येक अंक में प्रकाशित आलेखों पर आप अपनी प्रतिक्रिया प्रेषित करें।

हमारा पता है–

सेवा संवाद
सी–91, निरालानगर, लखनऊ 226020 (उ.प्र.0)
E-Mail: sewasamwad@gmail.com / sevasamvad@outlook.com
मो0 7081241700, 9454049918

समाचार

शोक सन्देश

कैंसर का इलाज करने वाले का निधन

धर्मशाला, तिब्बतियन पद्धति से कैंसर का इलाज करने वाले पद्मश्री डॉ. यशी ढोडेन का मैक्लोडगंज स्थित उनके आवास पर निधन हो गया। 92 वर्षीय डॉ. यश पिछले कुछ दिनों से अस्वस्थ चल रहे थे। तिब्बतियन डॉ. यशी ढोडेन बौद्ध धर्मगुरु दलाईलामा के निजी चिकित्सक भी रहे। उनके निधन से जहां तिब्बती समुदाय में शोक की लहर है, वहीं जिन कैंसर के मरीजों को डॉ. यशी के इलाज ने नया जीवन दिया, उनकी आंखें भी नम हैं।

कीर्तिशेष पद्मश्री डॉ0 यशी

डॉ. ढोडेन के परिवार के सदस्य लोबसांग त्सेरिंग ने बताया कि शुक्रवार 29 नवंबर को उनका संस्कार मैक्लोडगंज में किया जाएगा। दो दिन तक उनकी देह की तिब्बतियन परंपरा के अनुसार पूजा होगी। डॉ. यशी कैंसर के अलावा ट्यूमर, एड्स, सुराइसिस, हेपेटाइटिस आदि गंभीर रोगों का भी इलाज करते थे। उनके क्लीनिक में लोग देश–विदेश से पंहुचते थे। ऐसे पुण्यात्मा की दिवगंत आत्मा की भाांति के लिए हम परम पिता परमात्मा से प्रार्थना करते हुए श्रद्धांजलि अर्पित करते है।

सम्पादक
सेवा संवाद एवं
भाऊराव देवरस सेवा न्यास परिवार

युवा "जॉब सीकर" नहीं, "जॉब क्रिएटर" बनें

निधि त्रिपाठी

जलियांवाला बाग नरसंहार के 100 साल पूरे होने पर परिषद ने जलियांवाला बाग की मिट्टी देश के हर स्कूल–कॉलेज में भेजी

आगरा, अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद के 65वें राष्ट्रीय अधिवेशन (आगरा कॉलेज मैदान पर 22 से 25 नवम्बर, 2019 तक) में चार प्रस्ताव पारित किए गए। पहले प्रस्ताव में राज्य विश्वविद्यालयों के संवर्धन पर जोर दिया गया। मांग की गई कि राज्य और केन्द्रीय विश्वविद्यालयों का शैक्षिक कलेंडर एक समान हो। दूसरा प्रस्ताव वर्तमान राष्ट्रीय परिदृश्य पर पारित हुआ। मांग की गई कि एनआरसी पूरे देश में लागू की जाए। तीसरे प्रस्ताव में जम्मू एवं कश्मीर से धारा 370 हटाने का स्वागत किया गया. आतंकवाद पीड़ित परिवारों को मदद की मांग की गई। चौथे प्रस्ताव में श्रीराम जन्मभूमि पर सदियों बाद आए सुप्रीम कोर्ट के निर्णय पर सभी समुदायों का अभिनंदन किया गया।

मंगलवार को यूथ हॉस्टल में आयोजित पत्रकार वार्ता में अ.भा. विद्यार्थी परिषद की राष्ट्रीय महामंत्री निधि त्रिपाठी ने बताया कि जलियांवाला बाग नरसंहार के 100 साल पूरे होने पर जलियांवाला बाग की मिट्टी देश के हर स्कूल–कॉलेज में भेजी गई है।

उन्होंने बताया कि एबीवीपी ने कर्नाटक में स्कूल बेल अभियान लिया था। इस अभियान के माध्यम से छात्र और शिक्षकों के अभाव में बंद होने जा रहे सैकड़ों स्कूल पुनर्जीवित किए गए। अभियान में एनएसएस, एनसीसी, आदि ने भाग लिया। इस साल जिस राज्य में आवश्यकता होगी, वहां स्कूल बेल अभियान चलाया जाएगा। छात्रों को विद्यालय आने के लिए प्रेरित किया जाएगा. शिक्षा के प्रति रुचि जगाई जाएगी।

ईश्वरीय शक्ति का संकल्प सदैव पूरा होता है

भय्याजी जोशी

मुंबई राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के सरकार्यवाह सुरेश उपाख्य भय्याजी जोशी ने कहा कि विश्व में केवल ईश्वरीय शक्ति का संकल्प पूरा होता है, आसुरी शक्ति का संकल्प कदापि पूरा नहीं होता। कई बार यह आसुरी शक्ति हमें प्रभावी होती दिखाई देती है, परंतु वह विजयी नहीं होती।

वाशी में सुरेश हावरे जी द्वारा लिखित 'शिदोरी' पुस्तक का भय्याजी जोशी तथा इतिहास संशोधक, लेखक बाबासाहब पुरंदरे ने लोकार्पण किया। मराठी के ज्येष्ठ लेखक मधु मंगेश कर्णिक भी कार्यक्रम में उपस्थित रहे।

सरकार्यवाह जी ने कहा कि भारत में हिन्दू, इस नाते से जन्म लेना यह हम सब का सौभाग्य है। ईश्वरीय शक्ति हमारी परीक्षा लेती है। ठीक उसी तरह भगवान श्रीराम ने सैकड़ों वर्षों तक हमारी परीक्षा ली है। हम राम मंदिर प्रत्यक्ष साकार होता हुआ देख पाएंगे, यह भी हमारा सौभाग्य ही है। लगभग साढ़े तीन सौ से चार वर्षों की परतंत्रता से स्वतंत्र होकर हम आज समृद्धि की ओर चल पड़े हैं। सत्य संकल्प का दाता प्रत्यक्ष ईश्वर ही है। मंदिर अवश्य बनेगा। सौभाग्य से इस परिवर्तन से, ईश्वरीय मालिका से हम जुड़ गए हैं। हावरे जी की रामभक्ति का प्रभाव है, कि उन्हें यह अवसर प्राप्त हुआ है। उन्होंने कहा कि हावरे जी यह एक बहुआयामी व्यक्तित्व हैं। वे वैज्ञानिक भी हैं और ईश्वर की भक्ति भी करते हैं। एक महत्त्वपूर्ण देवस्थान का दायित्व संभालने से उनकी भक्ति प्रकट होती है। जिस तरह यात्रा शुरू करते वक्त हम 'शिदोरी' (यातायात का खानपान) लेकर जाते हैं, वैसे ही सुरेश हावरे जी द्वारा लिखी यह पुस्तक 'शिदोरी' जीवन में हमें सहाय्यभूत रहेगी। हमारे जीवन को दिशा देगी।

समाचार

सेवा कार्य पर आधारित धारावाहिक "समर्पण"

समाज में सेवाभाव से काम करने वाले हजारों हाथ हैं, जो अनेक सामाजिक संस्थाओं से जुड़े हैं। ऐसे व्यक्तिध्संस्थाओं पर रोशनी डालने का काम जल्द प्रसारित होने वाले 'समर्पण' नामक धारावाहिक से होने जा रहा है। आरुषा क्रिएशन द्वारा प्रस्तुत यह धारावाहिक 17 नवंबर से हर रविवार सुबह 10 बजे दूरदर्शन के राष्ट्रीय चौनल पर (डी.डी–1 नेशनल) प्रसारित होगा।

कुछ लोगों का मकसद केवल पैसा कमाना, प्रसिद्धि या प्रतिष्ठा हासिल करना नहीं होता, बल्कि किसी के चेहरे की मुस्कान की वजह बनना, होता है। यह ऐसे लोग होते हैं, जो दूसरों की खुशियों में अपना समाधान ढूंढते हैं। अपने सामाजिक दायित्व को निभाते हैं। समाज में चेतना की अग्नि प्रज्ज्वलित करते हैं, यह समर्पण की परंपरा भारतीय दर्शन का एक हिस्सा है३और इसी पर आधारित हमारा धारावाहिक केवल एक माध्यम है, ऐसी कहानियों को आपके सामने प्रदर्शित करने का। इसी माध्यम से समर्पण के अर्थ का अनुभव करने के लिए, निःस्वार्थ भाव से देशभर में चलने वाले सेवा कार्यों पर आधारित है यह धारावाहिक–समर्पण।

'आरुषा क्रिएशन्स' के एकनाथ सातपुरकर द्वारा निर्मित धारावाहिक में समस्याओं से जूझने वाले लोगों का, संस्थाओं का परिचय दिया गया है, जो देशभर के विभिन्न राज्यों में चल रहे सेवा कार्य, जैसे शिक्षा, आरोग्य, दिव्यांग, महिला सबलीकरण, रोजगार, पर्यावरण आदि से जुड़े हैं।

व्रत-त्योहार, जनवरी 2020

दिनांक	दिन	व्रत–त्योहार
1	बुधवार	नववर्ष आरम्भ
2	गुरुवार	गुरुगोबिन्द सिंह जयंती
5	रविवार	शाम्ब दशमी
6	सोमवार	पुत्रदा एकादशी व्रत
8	बुधवार	प्रदोष व्रत
9	गुरुवार	गुरु उदय पूर्व में प्रातः 6:33
10	शुक्रवार	स्नान–दान–व्रत की पौष पूर्णिमा, प्रयाग कल्पवास प्रारम्भ
11	शनिवार	उत्तराषाढ़ा के सूर्य रात 2:12
12	रविवार	स्वामी विवेकानन्द जयन्ती
13	सोमवार	तीज व्रत, माघ गणेश चौथ व्रत
15	बुधवार	मकरसंक्रान्ति दिन (खिचड़ी) खरमास समाप्त
20	सोमवार	षट्तिला एकादशी व्रत
22	बुधवार	प्रदोष व्रत
23	गुरूवार	मास शिवरात्रि व्रत, सुभाषचन्द्र बोस जयन्ती
24	शुक्रवार	स्नान–दान–श्राद्ध अमावस्या, मौनी अमावस्या
25	शनिवार	बल्लभ जयन्ती
26	रविवार	गणतन्त्र दिवस, चन्द्रदर्शन
28	मंगलवार	वैनायकी गणेश चतुर्थी व्रत
30	गुरुवार	बसंत पंचमी, सरस्वती पूजा
31	शुक्रवार	शीतला षष्ठी–बंगाल

पावन स्मृति

(पुण्य भूमि भारत में जन्म लेकर जिन्होंने जीवन पर्यन्त मानव की सेवा और मानवता की रक्षा में अपना सर्वस्व समर्पित कर कीर्तिमान स्थापित किया, अपने बहुआयामी कार्यों द्वारा जीवन के विविध क्षेत्रों में आलोक स्तम्भ बनकर हमारा मार्ग दर्शन किया तथा जो आज भी हमारे प्रेरणा स्रोत हैं ऐसे उन तमाम दिव्य महापुरुषों की पावन स्मृति में श्रद्धा सुमन समर्पित है–सम्पादक)

दिनांक	दिवस	महापुरुष का नाम
1 जनवरी	जन्मदिवस	साहित्यप्रेमी राजनेता : डा0 सम्पूर्णानन्द
2 जनवरी	जन्मदिवस	अखण्ड कर्मयोगी : माधवराव देशमुख
4 जनवरी	पुण्य तिथि	संकीर्तन से बाँध निर्माण
5 जनवरी	पुण्य तिथि	वीर रस के प्रसारक : स्वामी शिवचरण लाल
6 जनवरी	पुण्य तिथि	जयपुर फुट के निर्माता : डा0 प्रमोद करण सेठी
7 जनवरी	जन्मदिवस	कलाकारों के कलाकार : योगेन्द्र बाबा
7 जनवरी	पुण्य तिथि	सादगी की प्रतिमूर्ति : श्री लक्ष्मण श्रीकृष्ण भिड़े
8 जनवरी	पुण्य तिथि	राष्ट्र आराधान के स्वर : चन्द्रकान्त भारद्वाज
8 जनवरी	पुण्य तिथि	भारत सेवाश्रम संघ के संस्थापक : स्वामी प्रणवानन्द
9 जनवरी	जन्मदिवस	सरलचित्र प्रचारक : श्री तिलकराज कपूर
11 जनवरी	बलिदान दिवस	देशभक्त सरदार सेवासिंह
12 जनवरी	जन्मदिवस	विश्वविजेता : स्वामी विवेकानन्द
12 जनवरी	जन्मदिवस	आधुनिक विज्ञान और परम्परा के महर्षि : महेशयोगी
14 जनवरी	जन्मदिवस	साहित्य शिरोमणि : विद्यानिवास मिश्र
15 जनवरी	जन्मदिवस	स्वतन्त्रता सेनानी पत्रकार : वीरेन्द्र वीर
16 जनवरी	पुण्य तिथि	राष्ट्रीय चेतना के अमर गायक : रामनरेश त्रिपाठी
17 जनवरी	बलिदान दिवस	रामसिंह कूका और उनके गोभक्त शिष्य
18 जनवरी	जन्मदिवस	अनुशासन प्रिय : महादेव गोविन्द रानाडे
18 जनवरी	पुण्य तिथि	आत्मजागरण के पुरोधा : दादा लेखराज
20 जनवरी	बलिदान दिवस	छत्तीसगढ़ के अमर बलिदान : गेंदसिंह
21 जनवरी	पुण्य तिथि	परवावज के साधक : पुरूषोत्तम दास
22 जनवरी	पुण्य तिथि	जय–जय श्री रघुवीर समर्थ
22 जनवरी	जन्मदिवस	क्रातिकारी नृत्यांगना : अजीजन बाई
23 जनवरी	जन्मदिवस	नेताजी सुभाषचन्द्र बोस
25 जनवरी	जन्मदिवस	कवि माइकेल मधुसूदन दत्त
26 जनवरी	जन्मदिवस	स्वतन्त्रता सेनानी : रानी माँ गाइडिन्ल्यू
27 जनवरी	जन्मदिवस	वनों का रक्षक : निर्मल मुण्डा
29 जनवरी	जन्मदिवस	सबके रज्जू भैया

समाचार

परिवार प्रबोधन वर्तमान समय की आवश्यकता है

डॉ. मोहन भागवत जी

नसिक, राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के सरसंघचालक डॉ. मोहन भागवत जी नासिक प्रवास के दौरान गोले कॉलोनी स्थित राष्ट्र सेविका समिति के कार्यालय में सेविका समिति की बहनों से मिलें बहनों ने उत्साह के साथ सरसंघचालक जी का स्वागत किया।

सरसंघचालक मोहन भागवत जी ने कहा कि मातृ शक्ति की प्रतिष्ठा कायम रखते हुए परिवार प्रबोधन वर्तमान समय की आवश्यकता हैं जगत–जननी, प्रकृति, पुरुष, यह प्राकृतिक रचना हैं हमारी संस्कृति में सभी के समान होने की भावना हैं देश में विदेशी आक्रमणों के कारण समानता की भावना नष्ट हो गई। वर्तमान समय में परिवार संस्था की रक्षा के लिए परिवार का प्रबोधन करने की आवश्यकता है।

उन्होंने संस्था में अष्टभुजा देवी का दर्शन किया। सदन में लगाई प्रदर्शनी देखी। **संस्था की वरिष्ठ सदस्य भानुताई गाइधानी ने संस्था की ओर से शॉल, श्रीफल, गुलदस्ता और रानी लक्ष्मीबाई की प्रतिमा भेंट देकर उनका सत्कार किया।**

प्रारंभ में संस्था का परिचय संस्था की सदस्य शोभा गोसावी द्वारा कराया गया। गीता कुलकर्णी ने नासिक जिले में राष्ट्र सेविका समिति की शाखाओं के बारे में जानकारी दी। समिति की जिला कार्यवाहिका गीता कुलकर्णी ने नासिक जिले में काम के बारे में जानकारी दी। विद्याताई चिपलूनकर, डॉ. शुभांगीताई कुलकर्णी, मंगलाताई सौंदाणकर सहित राष्ट्र सेविका समिति की सेविकाएं, प्रतिष्ठान की कार्यकारिणी उपस्थित थे।

सेवा करने से हमेशा अच्छे संस्कार हमें मिलते हैं। जिंदगी में कामयाबी के लिए सेवा और सदाचार दोनों का ही बहुत बड़ा योगदान है। जो व्यक्ति सेवा और सदाचार से दूर रहता है, वह कभी सफल नहीं हो पाता। जिंदगी को सफल बनाने के लिए यह बड़ा मार्गदर्शक है। हम सभी को अपने जीवन में सदाचार व सेवा भाव को विकसित करने के लिए प्रयत्नशील रहना चाहिए।

फरीना, छात्रा कक्षा–11 जेके माडर्न एकेडमी

सेवा में हिन्दू दर्शन

डॉ. कृष्णगोपाल जी

संत ईश्वर फाउंडेशन ने राष्ट्रीय सेवा भारती के सहयोग से "संत ईश्वर सम्मान 2019" का आयोजन रविवार को एन.डी.एम.सी. कन्वेंशन सेंटर, संसद मार्ग, नई दिल्ली में किया। संत ईश्वर सम्मान में विभिन्न क्षेत्रों में सेवारत संस्थाओं व महानुभावों को सम्मानित किया गया। चार व्यक्तियों व स्वयंसेवी संस्थाओं को संत ईश्वर विशिष्ट सेवा सम्मान व बारह व्यक्तियों एव संस्थाओं को संत ईश्वर सेवा सम्मान दिया गया। जिसमें विशेष सेवा सम्मान सियाचिन बिग्रेड, भारतीय सेना को दिया गया। समारोह के मुख्य अतिथि राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के सह सरकार्यवाह डॉ. कृष्ण गोपाल एवं विशिष्ट अतिथि केन्द्रीय संस्कृति एवं पर्यटन राज्यमंत्री (स्वतंत्र प्रभार) प्रहलाद सिंह पटेल रहे।

सह सरकार्यवाह डॉ. कृष्णगोपाल जी ने कहा जिनका आज सम्मान हुआ है। उन्होंने समाज में दूसरों के कष्ट को पहचाना, वह समस्याओं को लेकर सरकार के पास नहीं गए, उन्होंने किसी को दोष नहीं दिया, उन्होंने उपलब्ध सीमित संसाधनों से ही समाज कार्य किया व दूसरों की सहायता की। संत ईश्वर फाउंडेशन ने मिजोरम से लेकर राजस्थान, आंध्र प्रदेश से महाराष्ट्र तक समस्त भारत में निःस्वार्थ कार्य कर रहे ऐसे समाज सेवकों को खोज कर इस मंच पर लाने का प्रशंसनीय व अद्‌भुत कार्य किया है।

डॉ. कृष्णगोपाल जी ने कहा कि दुनिया का बड़े से बड़ा विद्वान और विश्वविद्यालय ऐसी कल्पना भी नहीं कर सकता जो भारत का व्यक्ति कल्पना कर सकता है। सामने खड़ा कोई व्यक्ति अगर संकट में है और तुम्हें यदि लगता है कि वह संकट में नहीं है तो तुम हिन्दू कहलाने के योग्य नहीं हो। हिन्दू कहलाना, मैं हिन्दू हूं, यह कोई फैशन नहीं है। हिन्दू कहते ही हमारे मन के भाव आध्यात्मिक हो जाने चाहिएं, मन करुणा से, संवेदना से भर जाना चाहिए। जो कुछ भी है, वह परमात्मा का है, यह भाव आना चाहिए। जिसको आवश्यकता है, उस आवश्यकता को देखकर, उसको परमात्मा के स्वरूप में स्वीकार कर उसकी सेवा करने में धन्यता का अनुभव करना यह भारत का हिन्दू दर्शन है।

उन्होंने स्वामी विवेकानंद का कथन बताया कि अपने पास जो कुछ है, वह समाज ने दिया है, समाज का है, सम्पत्ति, बुद्धि, ताकत सब कुछ समाज का है, इसलिए जितना आवश्यक है उतना ही अपने लिए रखना बाकी समाज को वापस दे देना, यही सेवा का मूल मंत्र है। इस भाव को अपने परिवार, पड़ोस, मित्रों में ले जाएं, जिससे सारा देश सेवा भाव में रत हो जाए।

कार्यक्रम के विशिष्ट अतिथि प्रहलाद सिंह पटेल ने कहा कि विभिन्न क्षेत्रों में सेवारत इन संस्थाओं व महानुभावों ने निःस्वार्थ अपने कार्यक्षेत्र में कार्य किया और कभी सोचा भी नहीं था कि उनके प्रकल्प के लिए उन्हें कभी कोई सम्मान देगा। ऐसे लोगों को समाज और सरकार दोनों का समर्थन मिलना चाहिए।

संत ईश्वर फाउण्डेशन की स्थापना सन् 2013 में की गई थी, इसी तरह के प्रयासों की कड़ी में प्रति वर्ष चार व्यक्तियों और स्वयंसेवी संस्थाओं को संत ईश्वर विशिष्ट सेवा सम्मान (प्रत्येक को 5 लाख रू की राशि) एवं अन्य बारह व्यक्तियों या संस्थाओं को संत ईश्वर सेवा सम्मान (प्रत्येक को 1 लाख रू की राशि) दिये जाते हैं।

भाऊराव देवरस सेवा न्यास

सी–91, निराला नगर, लखनऊ – 226020 (उ.प्र.)
फोन–फैक्स : 0522-4001837, 2789406, E-mail : bdsnyas@yahoo.co.in

सहकार निवेदन

पिछले 24 वर्षों में न्यास के सेवा कार्यों में जो उत्तरोत्तर वृद्धि हुयी है, उसमें किसी न किसी रूप में आपका ही स्नेह सहयोग रहा है। न्यास के पास आर्थिक संसाधनों की बहुत कमी है। न्यास द्वारा संचालित सेवा कार्य प्रभावित न हो अतः आयस्रोत को बढ़ाना होगा। न्यास द्वारा प्रस्थापित **कार्पस फण्ड** से प्राप्त होने वाली ब्याज राशि भी पूरी नहीं होती। अतएव लक्ष्य तक पहुँचने हेतु कार्पस फण्ड भी बढ़ाना होगा। समाज सेवा के क्षेत्र में गौरव को बढ़ाने वाले इस महत कार्य में जन-जन का सहयोग एवं सहकार अपेक्षित है। आप सभी उदारमना सेवाभावी महानुभावों के सहकार से ही यह न्यास सेवारत है।

न्यास के सेवा कार्यों हेतु आप इस प्रकार से सहयोग कर सकते हैं–

1. **सचल चिकित्सा सेवा के लिए**– रु. 11,000/- की मासिक धनराशि का सहयोग करके, एक सेवा बस्ती में अपनी ओर से निःशुल्क चिकित्सा सुविधा एवं औषधि का वितरण कराना।
2. **नेत्र चिकित्सा शिविर के लिए**– रु. 2000/- की धनराशि का सहयोग करके एक **मोतियाबिन्द पीड़ित** नेत्र रोगी का आपरेशन करवाकर नेत्र ज्योति प्रदान करना।
3. **विकलांग सहायता शिविर के लिए**– रु. 1,000/- से 6,000/- तक की राशि दे करके, एक विकलांग बन्धु की सहायता में उनके लिए कृत्रिम अंग, उपकरण, वैशाखी, ट्राईसाइकिल, ह्वील चेयर आदि की व्यवस्था कराना।
4. **कार्पस फण्ड (स्थायी निधि) के लिए**– रु. 10,000/- से अधिक की धनराशि का अर्पण करके, न्यास द्वारा संचालित सेवा कार्यों में उत्प्रेरक बनना।
5. **छात्रवृत्ति के लिए**– प्राथमिक रु. 3000/-, माध्यमिक रु. 5000/-, हाईस्कूल रु. 7000/-, इंटरमीडिएट रु. 8000/-, आईटीआई/डिप्लोमा रु. 10,000/-, स्नातक रु. 10000/-, परास्नातक रु. 12000/-, प्रतियोगी परीक्षाएँ रु. 15000/-, इंजीनियरिंग रु. 18000/- मेडिकल के छात्रों को रु. 20000/- की वार्षिक छात्रवृत्ति का सहयोग करके न्यास के माध्यम से पूर्वांचल और वनवासी क्षेत्र के बालकों के लिए वार्षिक छात्रवृत्ति भिजवाना।
6. **सेवा चेतना अर्द्धवार्षिक पत्रिका के लिए**– रु. 1,200/- की आजीवन सदस्यता ग्रहण करके तथा पत्रिका की विज्ञापन दरों के आधार पर अपनी क्षमतानुसार विज्ञापन के रूप में सहयोग करके सहायता करना।
7. **सेवा संवाद मासिक के लिए**– रु. 2,000/- की आजीवन एवं रु. 5,000/- की संरक्षक सदस्यता ग्रहण करके सहयोग करना।
8. **माधव सेवा आश्रम के लिए**– रु. 5,00,000/- का दान कर, एक कक्ष के निर्माण के द्वारा अपने किसी सम्बन्धी की स्मृति को स्थायी बनायें।

न्यास को सेवा कार्यों के लिए दिया गया दान आयकर अधिनियम की धारा 80G(5)(vi) के अन्तर्गत नियमानुसार करमुक्त है। अप्रवासी भारतीय भी दान दे सकते हैं। कृपया अपनी दानराशि चेक व ड्राफ्ट **भाऊराव देवरस सेवा न्यास** के पक्ष में जो **लखनऊ** में देय हो, अपने पैन नं. व पते के साथ भेज सकते हैं।

समाज सेवा-कार्यों हेतु आपसे अनुरोध है कि न्यास को यथा सम्भव अधिकाधिक सहयोग करें। दान की राशि आप सीधे हमारे खाते में भी जमा कर सूचित कर सकते हैं।

बैंक ऑफ इण्डिया, निरालानगर, लखनऊ बैंक खाता सं. **68061010000 9948 IFSC: BKID0006806**

भारतीय स्टेट बैंक, निरालानगर, लखनऊ बैंक खाता सं. **30448433657 IFSC: SBIN0003813**

आशा है सेवा के इस पुनीत कार्य में आप सभी अवश्य सहभागी बनेंगे।

पंडित दीनदयाल उपाध्याय स्वास्थ्य सेवा केन्द्र

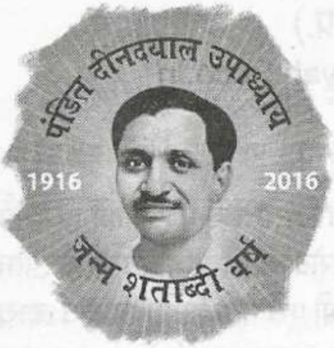

ग्राम परतोष, अमेठी (उ.प्र.)

भाऊराव देवरस सेवा न्यास
सेवा हि परमो धर्मः

अनुरोध

जिनकी कथनी और करनी में सदैव एकरूपता रही हो, जिन्होंने अपना सम्पूर्ण जीवन मातृभूमि के चरणों में अर्पित कर दिया हो, जो अकृत्रिमता से दूर, सहज, स्वाभाविक, सादा रहन-सहन और उच्च विचारों के धनी रहे हों, ऐसे समाज सेवी, कुशल संगठक, राष्ट्रभक्त श्रद्धेय पं. दीनदयाल उपाध्याय का जन्म 25 सितम्बर 1916 ई. को नगला चन्द्रभान, फरह, मथुरा (उ.प्र.) में हुआ था। बाल्यकाल से ही वे संवेदनशील रहे। उनके हृदय में समाज के निर्बल, पिछड़े, बनवासी, ग्रामीण, अनाश्रित, वृद्ध, अनपढ़-बालक, रोगी-पीड़ित सभी के प्रति मानवीय करुणा थी, उनके एकात्म मानव दर्शन और अन्त्योदय की भावना तथा समाज और राष्ट्र को समुन्नत करने के स्वप्न को साकार बनाने तथा आगे बढ़ाने की पवित्र भावना के साथ पंडित दीनदयाल जी की जन्मशती पर उनके प्रति आदर-सम्मान व्यक्त करने के लिए ग्राम परतोष, जिला अमेठी में पं. दीनदयाल उपाध्याय स्वास्थ्य सेवा केन्द्र की स्थापना का निर्णय लिया गया। इस निमित्त 20400 वर्गफुट जमीन क्रय कर ली गई है। अगला महत्त्वपूर्ण चरण निर्माण कार्य का है, जिसके लिए सहयोगी बन्धुओं से आर्थिक सहकार प्राप्त हो रहे हैं। इस महान यज्ञ कार्य में आहुति के लिए आप भी अपने सहकार से अनुगृहीत करें, यही आपसे विनती और प्रार्थना है।

कृपया अपनी सहयोग राशि भाउराव देवरस सेवा न्यास के पक्ष में चेक/ड्राफ्ट जो लखनऊ में देय हो, भेजने की कृपा करें। अथवा RTGS/NEFT के लिए Antyodaya Health Mission (Bhaorao Deoras Seva Nyas) A/c No. 680610110009463 Bank of India, Nirala Nagar Lucknow (IFSC Code: BKID0006806) मे धनराशि जमा कराकर अपने पैन नं. एवं पते के साथ कार्यालय के पते (सी-91, निरालानगर, लखनऊ-226020 दूरभाष 0522-4001837 मो. 9450020514) पर हमें सूचित करें।

– राजेश (संयोजक)
मो. 9793120738

भाऊराव देवरस सेवा न्यास को दिया गया दान आयकर अधिनियम की धारा 80G(5)(vi) के अन्तर्गत नियमानुसार करमुक्त है। न्यास का PAN AAATB1049G है।

संकल्प से नई राह

मुकेश शर्मा

लंदन की एक बस्ती में एक अनाथ बालक रहता था। वह अखबार बेचकर किसी तरह अपना गुजारा करता था। जब यह काम उसके हाथ से निकल गया, तो उसे एक जिल्दसाज की दुकान पर जिल्द चढ़ाने का काम मिल गया। उसे पढ़ने का बहुत शौक था। वह पुस्तकों पर जिल्द चढ़ाते समय उसमें लिखी महत्वपूर्ण जानकारियों को ध्यान से पढ़ता था।

एक दिन जिल्द चढ़ाते समय उसकी नजर बिजली से संबंधित एक लेख पर पड़ी। वह लेख उसे बहुत ही मनोरंजक लगा। वह उससे बहुत प्रभावित हुआ। उसने दुकान के मालिक से पुस्तक मांग ली और रात भर में उस लेख के साथ ही पूरी पुस्तक भी पढ़ डाली। इससे विद्युत से संबंधित प्रयोग करने में उसकी जिज्ञासा बढ़ती गई और धीरे–धीरे वह प्रयोग एवं परीक्षण के लिए छोटी–मोटी चीजें जुटाने भी लगा। लोग उसकी प्रतिभा के कायल होते जा रहे थे। एक ग्राहक तो उससे बहुत ही प्रभावित हुआ। उसने तय कर लिया कि वह बालक को आगे बढ़ने में हरसंभव मदद करेगा। वह ग्राहक एक दिन उस बालक को अपने साथ भौतिकशास्त्र के प्रसिद्ध विद्वान डेवी का भाषण सुनाने ले गया।

बालक ने डेवी की बातें ध्यान से सुनीं और उन्हें नोट भी कर लिया। इसके बाद बालक ने उनके भाषण की समीक्षा करते हुए अपने परामर्श लिखकर डेवी के पास भेज दिए। डेवी को बालक के सुझाव बहुत पसंद आए। उन्होंने उसे यंत्रों को व्यवस्थित करने के लिए अपने पास रख लिया। बालक उनके सहयोगी और नौकर दोनों की भूमिका निभाता रहा। वह दिन भर अपने कामों में व्यस्त रहता, रात को अध्ययन करता। थकान होने पर भी उसके चेहरे पर शिकन तक नहीं आती थी। वह भौतिकी के क्षेत्र में कुछ असाधारण करने का संकल्प ले चुका था। वह दिन–रात अध्ययन और शोध में लगा रहता था। यही बालक आगे चलकर दुनिया में माइकल फैराडे के नाम से विख्यात हुआ। ❑

हर महिला महारानी लक्ष्मीबाई

सुनीता भाटिया

वीरांगना महारानी लक्ष्मीबाई की जयंति के उपलक्ष्य में राष्ट्र सेविका समिति के तरुणी विभाग और शरण्या (समाज उत्थान संस्थान) ने संयुक्त रूप से "मणिकर्णिका–एक निरंतर दौड़ देश के लिए" का आयोजन किया। 05 किलोमीटर लंबी इस दौड़ में करीब 2,000 युवतियों और महिलाओं ने भाग लिया। दौड़ के उपरांत पांच प्रथम, 15 द्वितीय और 25 तृतीय पुरस्कार दिए गए।

राष्ट्र सेविका समिति, दिल्ली की प्रांत प्रचारिका विजया शर्मा ने महारानी लक्ष्मीबाई के संघर्ष और बलिदान की गौरव गाथा सुनाते हुए युवतियों को उनसे प्रेरणा लेने और राष्ट्र के लिए अपना जीवन समर्पित करने का आह्वान किया। उन्होंने कहा कि विदुषी महारानी लक्ष्मीबाई महान योद्धा और कुशल रणनीतिकार ही नहीं, कुशल प्रशासक और सक्षम प्रजापालक भी थीं। जीवन के हर क्षेत्र में, हर मोड़ पर वे हमें प्रेरणा देती हैं। नेता जी सुभाष चंद्र बोस ने जब महिला विंग का गठन किया तो उसे नाम दिया– रानी झांसी रेजीमेंट। इस रेजीमेंट की प्रमुख का नाम भी लक्ष्मी (लक्ष्मी सहगल) ही था।

प्रांत कार्यवाहिका सुनीता भाटिया ने कहा कि हर महिला में एक महारानी लक्ष्मीबाई छिपी है जो हालात से संघर्ष करना जानती है, आगे बढ़ने की प्रेरणा देती है, आवश्यकता है तो इसे जगाने की। मणिकर्णिका दौड़ एक प्रयास है, युवतियों और महिलाओं को उनकी आंतरिक शक्ति का अहसास दिलाने का, उन्हें प्रेरणा देने का कि वे भी कठिन से कठिन परिस्थिति में सफल हो सकती हैं।

लेफ्टिनेंट मंजू, पहलवान टीना शर्मा, बी बी

बुलबुल (सुप्रसिद्ध पहलवान और पहलवान खली की बहन) और राजलक्ष्मी ने दौड़ को हरी झंडी दिखाकर शुभारंभ किया। राजलक्ष्मी ने दिल्ली से गुजरात में स्टैच्यू ऑफ यूनिटी का सफर मोटरसाइकिल पर तय किया है। वे 90 टन के ट्रक को खींचने का रिकॉर्ड भी बना चुकी हैं।

कार्यक्रम की अध्यक्षता डॉक्टर रजनी सरीन ने कीं विशिष्ट अतिथि प्रोफेसर (डॉक्टर) तनुजा मनोज नेसरी, निदेशक, अखिल भारतीय आयुर्वेद संस्थान आयुष मंत्रालय, भारत सरकार और बिंदु डालमिया, सदस्य नीति आयोग थीं।

❑

प्यार का ज़हर

सीताराम गुप्ता

एक लड़की शादी के बाद अपनी ससुराल पहुंची। उसकी सास बहुत ही सख़्त स्वाभाव वाली एक बेहद ख़राब औरत थी जिसके कारण उसका जीना मुश्किल हो गया। वह बहुत दुखी रहने लगी। वह किसी भी क़ीमत पर उससे छुटकारा पाने के उपाय सोचती रहती। एक बार जब वो अपने मायके आई तो उसने अपने घरवालों व पड़ोसियों को अपनी सास के बारे में बताया। उसके पड़ोस में रहने वाले एक समझदार व्यक्ति ने जब उसकी सास की दुष्टता के बारे में सुना तो उसने कहा कि वो उसे उसकी सास से छुटकारा दिला सकता है। कैसे? लड़की के ये पूछने पर उस व्यक्ति ने उसे एक डिब्बे में चूर्ण जैसी कोई चीज़ देते हुए कहा कि इसमें एक धीमा ज़हर है। इसमें से रोज़ थोड़ा–थोड़ा अपनी सास के खाने में मिला देना। वो कुछ ही महीनों में मर जाएगी और तुझे उससे छुटकारा मिल जाएगा। तुम्हारी सास व अन्य लोगों को तुझ पर शक न हो इसलिए इस दौरान अपनी सास की ख़ूब इज़्ज़त करना और उसका कहना मानना। उसे रोज़ अच्छा–अच्छा खाना बनाकर खिलाना। लड़की ख़ुशी–ख़ुशी ये सब करने को तैयार हो गई।

लड़की जब पुनः अपनी ससुराल पहुंची तो उसने वैसा ही किया जैसा उसके पड़ोस में रहनेवाले समझदार व्यक्ति ने कहा था। वह अपनी सास की ख़ूब इज़्ज़त करती और अच्छे से अच्छा खाना बनाकर व उसमें पड़ोसी का दिया हुआ ज़हर डालकर प्रेमपूर्वक अपनी सास को खिलाने का नाटक करती। लेकिन पुत्रवधू की इस काल्पनिक सेवा और सम्मान ने सास का मन बदल दिया। उसका दिल जीत लिया। वह मन ही मन कहती कि कितनी अच्छी लड़की है मेरी पुत्रवधू! और वह अपनी पुत्रवधू से सचमुच प्यार करने लगी। उसके प्रति उसका व्यवहार पूरी तरह से बदल गया। वह उस पर अपने स्नेह की बरसात करने लगी। अपनी सास के इस अद्वितीय स्नेहपूर्ण व्यवहार व प्यार के कारण लड़की भी अपनी सास की और अधिक सेवा व सम्मान करने लगी। दोनों को ही एक दूसरे से बेहद प्रेम हो गया और वह इतना अधिक बढ़ गया कि वे एक दूसरे के बिना रहने की कल्पना भी नहीं कर सकती थीं।

लड़की ये सोचकर कि ज़हर के प्रभाव से उसकी सास कुछ ही दिनों में मर जाएगी दुखी रहने लगी। अब वह किसी भी तरह से अपनी सास को खोना नहीं चाहती थी। लड़की पुनः एक दिन अपने मायके गई और पड़ौस में रहनेवाले समझदार व्यक्ति से कहा, '' अब मैं अपनी सास को प्यार करने लगी हूं। मैं उसके बिना नहीं रह सकती। आप किसी भी तरह से मेरी सास को बचा लीजिए।'' पड़ोसी ने कहा कि तुम्हारी सास को कुछ नहीं होगा क्योंकि मैंने जो चीज दी थी वो ज़हर नहीं स्वास्थ्यवर्धक औषधि थी। ज़हर तो तुम्हारे मन में था जो सास के प्रति तुम्हारे अच्छे व्यवहार और सेवाभावना के कारण प्यार में बदल चुका है।'' ये सुनकर लड़की की जान में जान आई। तो ऐसा होता है सम्मान और देखभाल का प्रभाव। ज़हर देकर हम लोगों से छुटकारा नहीं पा सकते लेकिन किसी का दिल जीतकर उसे अपना बना सकते हैं। उसे इतना क़रीब ला सकते हैं कि उससे दूर होने की कल्पना भी नहीं कर सकते।

समाचार

विद्यालय बालक की तपस्थली

जयपुर, 70वें संविधान दिवस के अवसर पर आदर्श शिक्षा परिषद समिति, जयपुर द्वारा प्रांत का पहला शिशु संगम जवाहर नगर स्थित सरस्वती बालिका विद्या मंदिर में सम्पन्न हुआ।

मुख्य वक्ता विद्या भारती बालिका शिक्षा की राष्ट्रीय सह संयोजिका प्रमिला शर्मा जी ने कहा कि संस्कार युक्त व गुणवत्तापूर्ण शिक्षा देने के उद्देश्य से सरस्वती शिशु मंदिर का बीजारोपण हुआ था, जो आज वटवृक्ष बन चुका है। विद्या मंदिरों में भी बालकों को शारीरिक, मानसिक व बौद्विक विकास की शिक्षा दी जाती है। उन्होंने कहा कि माता बालक की प्रथम गुरु होती है, उन्हें बालक को समर्थ गुरू रामदास, शिवाजी महाराज, महाराणा प्रताप के समान बहादुर व सुयोग्य बनाने की शिक्षा देनी चाहिए। बालक को सभ्य, संस्कार युक्त बनाना विद्या मंदिरों के संचालन का मुख्य लक्ष्य है। विद्यालय बालक की तपस्थली होती है, जहां उसे संस्कार मिलते हैं?

राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के जयपुर प्रांत प्रचारक डॉ. शैलेन्द्र जी ने कहा कि बालक को जो संस्कार शिशु अवस्था में दिए जाते हैं, वे संस्कार बालक में जीवन पर्यन्त बने रहते हैं। बालक को गुण सम्पन्न बनाने में वीर जीजा माता जैसा बनकर संस्कार देने होंगे। जिससे भारत विश्व का सिरमौर बन सके। भारत माता की जय का उद्घोष करने वाले बालक कभी राष्ट्र विरोधी नहीं हो सकते, इसलिए आज बालकों में संस्कार रूपी बीजारोपण करना अत्यावश्यक है। जिससे देश की भावी पीढ़ी राष्ट्रभक्त, संस्कारयुक्त व देश के प्रति चिंतन करने वाली बन सके।

समिति के अध्यक्ष गोविंद प्रसाद अरोड़ा जी ने गुरू नानकदेव के जीवन की शिक्षाएं बालकों को देने की बात कहते हुए संविधान स्थापना दिवस पर प्रकाश डाला। कार्यक्रम में जयपुर महानगर के 19 विद्यालयों के 3 से 7 वर्ष आयु वर्ग के करीब दो हजार भैय्या–बहन व अभिभावक उपस्थित रहे।

कार्यक्रम के प्रारंभ में प्रदर्शनी का उद्घाटन डॉ. शैलेन्द्र जी ने किया। नन्हें बालकों द्वारा पथ संचलन, शारीरिक प्रदर्शन, सांस्कृतिक व देशभक्ति से परिपूर्ण कार्यक्रमों की मनमोहक प्रस्तुति दी गई। संघ की अखिल भारतीय कार्यकारिणी के सदस्य हस्तीमल जी, पाथेय कण के प्रबंध संपादक माणकचंद जी, कुंजबिहारी जी, सुरेश वधवा जी सहित बड़ी संख्या में प्रबुद्धजन उपस्थित रहे।

पुस्तक विमोचन

मेरठ, विश्व संवाद केन्द्र- केशव भवन सूरजकुण्ड रोड, मेरठ पर डॉ. पीयूष लता द्वारा लिखित पुस्तक **'आराध्या–भारत की महान नारियां'** का विमोचन किया गया। इस अवसर पर राष्ट्रदेव पत्रिका के सम्पादक अजय मित्तल ने बताया कि विश्व संवाद केन्द्र पत्रकारिता एवं लेखन के क्षेत्र में कार्य करता है। प्रति वर्ष लेखन के क्षेत्र में प्रोत्साहन देने के लिये एक पुस्तक का प्रकाशन भी किया जाता है। इसी क्रम में इस पुस्तक का प्रकाशन किया गया है। विशिष्ट अतिथि थल सेना मुख्यालय दिल्ली में डायरेक्टर रेणुका त्यागी जी ने कहा कि भारतीय परम्परा **"यत्र नार्यस्तु पूजयन्ते, रमन्ते तत्र देवता"** की रही है। प्रारम्भिक समय से ही भारतीय नारी हर क्षेत्र में अग्रणी रही है, परन्तु इस्लामिक काल में महिलाओं के सम्मान में कमी आई। मुख्य अतिथि व कवि डॉ. हरिओम पंवार ने महिलाओं के योगदान को नमन करते हुए उनके सम्मान में अपनी कविताएं प्रस्तुत कीं। पुस्तक की लेखिका डॉ. पीयूषलता ने पुस्तक के प्रकाशन में सभी सहयोगियों के प्रति आभार प्रकट किया।

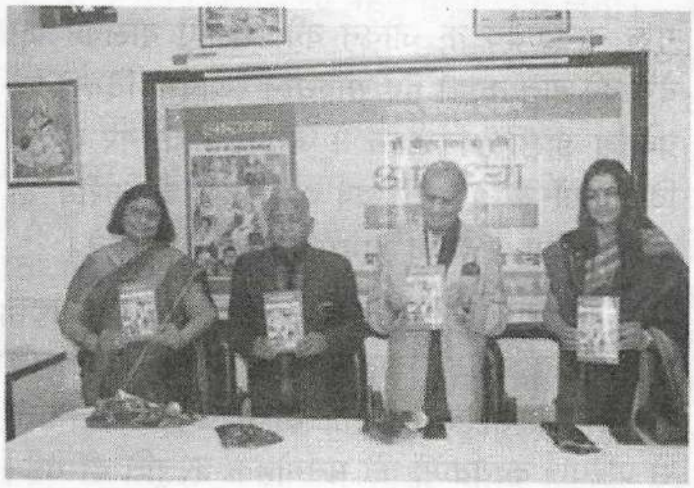

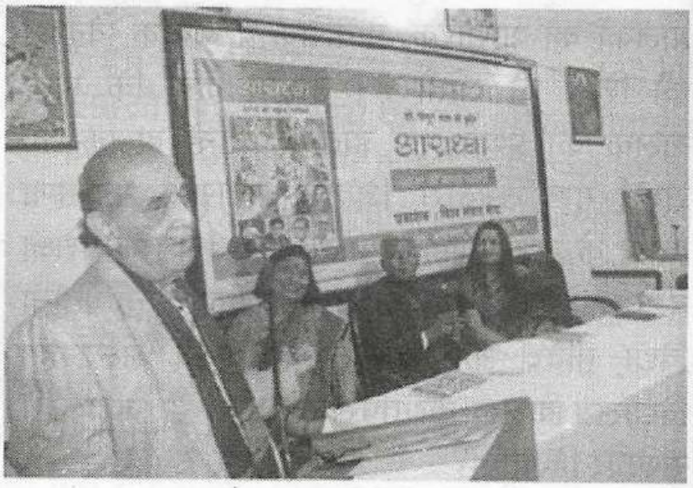

केशव भवन न्यास के अध्यक्ष आनन्द प्रकाश अग्रवाल ने सभी उपस्थितजनों का धन्यवाद प्रकट किया। कार्यक्रम का संचालन डॉ. कपिल अग्रवाल ने किया।

अमर रहे गणतन्त्र हमारा

डॉ. राम बहादुर 'ब्यथित'

विजयी विश्व तिंरगा प्यार,
जन–जन की आँखों का तारा।
आये तूफाँ, ठहर गये सब,
लोकतन्त्र पर कभी न हारा।।

विश्व गुरु भारत बन जाये,
ज्ञान–सुरभि जग में बिखराये।
विश्व शान्ति है लक्ष्य हमारा,
अमर रहे गणतन्त्र हमारा।।

नि:शुल्क नेत्र चिकित्सा शिविर सम्पन्न

भाऊराव देवरस सेवा न्यास द्वारा अपने स्वास्थ्य सेवा प्रकल्पसे पूर्व वर्षों के भांति इस वर्ष भी नि:शुल्क नेत्र चिकित्सा शिविर का आयोजन दिनांक 21 नवम्बर 2019 को सेवा समर्पण संस्थान, बिन्दौवा, मोहनलालगंज, लखनऊ में किया गया। इस शिविर का उद्‌घाटन लखनऊ के मुख्य चिकित्साधिकारी डॉ0 नरेन्द्र अग्रवाल एवं न्यास के वरिष्ठ न्यासी एवं उपाध्यक्ष ई0 रामनिवास जैन द्वारा किया गया। इस अवसर पर न्यास के वरिष्ठ चिकित्सक डॉ0 सुधांशु उपाध्याय, स्वास्थ्य सेवा प्रकल्प प्रभारी डॉ0 विनय मिश्रा तथा अन्य गणमान्य व्यक्ति उपस्थित थे। इस शिविर में कुल 184 रोगियों का नेत्र परीक्षण किया गया, तथा 117 लोगों को मोतियाबिन्द आपरेशन हेतु चयनित किया गया। सभी चयनित मोतियाबिन्द प्रभावित रोगियों का आपरेशन इन्दिरा गाँधी नेत्र चिकित्सालय एवं अनुसधान केन्द्र, कैसरबाग, लखनऊ में विभिन्न तिथियों में किया जा रहा है।

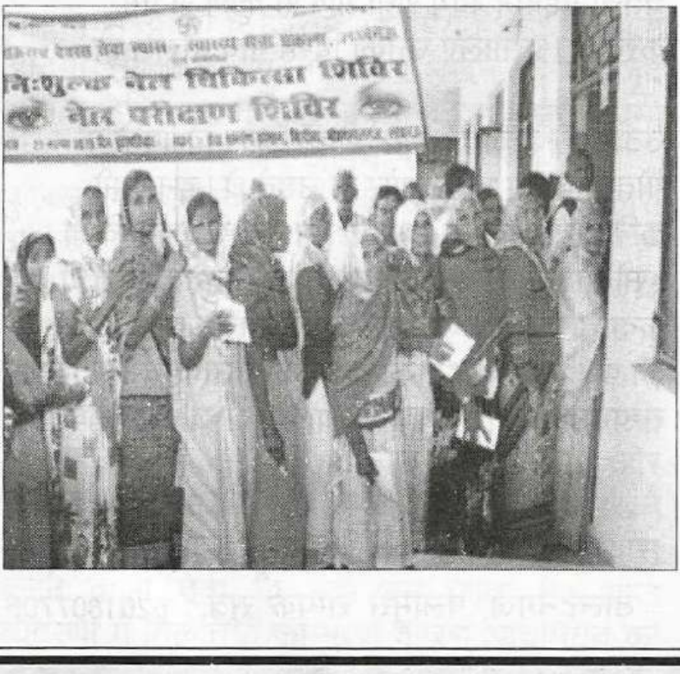

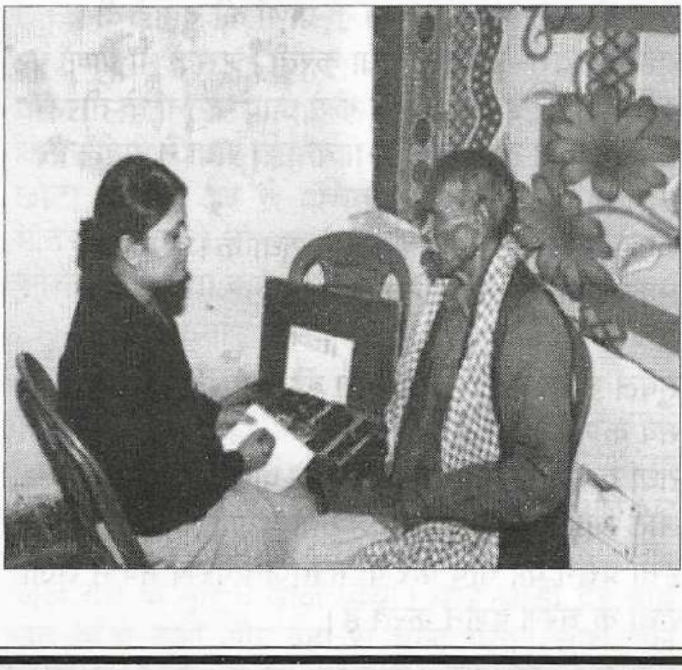

श्री कृष्ण एवं सुबल प्रसंग

श्री कृष्ण गोचारण के लिए कब से बन में आ चुके थे। कदम्ब के नीचे बांसुरी बजा–बजाकर राधा को टेर रहे थे। परन्तु दूर–दूर तक राधा के आने का कोई संकेत न था। ऐसा कई दिनों से हो रहा था। राधा का भाई 'सुबल' कृष्ण का सखा भी था। बारम्बार खेलने का हठ कर रहा था, पर कृष्ण जैसे अपने

आप में नहीं थे। व्याकुलता बढ़ गई थी तो सुबल से आग्रह करने लगे 'सखा' कुछ करो, उसे बुला लाओ। सुबल खीझ कर बोला, 'उसका पति अधन घोष गोप', द्वार पर बैठा रहता है, रखवाली के लिए। लड़ाका ननदें जटिलाओं कुटिला आंगन में नजर रखे रहती हैं। कैसे आए वह ? रोज–रोज बुलाकर

तुमने सारे घर को उसका शत्रु बना दिया है। मैं नहीं जाता अबकी बार, बहुत हो गया। श्रीकृष्ण अधीर हो गये। विवश होकर सुबल चल पड़ा। एक छोटा सा बछड़ा साथ ले लिया। उसे हांकता हुआ भगाने लगा। राधा के द्वार से पहले उसकी ऐसी पूंछ मरोड़ी की वह सीधा आंगन से होता हुआ राधा के कक्ष में जा धमका। घर के लोगों

ने कोई विशेष ध्यान नहीं दिया। सुबल पीछे–पीछे राधा के पास पहुंचा। कृष्ण के प्राणों की दुहाई दी। सहमी बावरी–सी राधा क्या करती। उसके भी प्राणों पर बनी थी। पर इतने पहरे में कैसे जाएं जमुना के तीर। सुबल जल्दी से एक योजना बनाई। राधा ने सुबल के

कपड़े पहन लिए और सुबल ने राधा के। बछड़े को लेकर तेजी से बाहर निकल गई।

सुबल घूंघट काढ़ कर आंगन बुहारता रहा। घर के सब काम–काज करता रहा।
राधा कृष्ण मिलन हुआ। दोनों के प्राण लौटे। राधा लौट आई। किसी को संदेह नहीं हुआ।
इसी प्रसंग को याद कर के भक्तजन पुरूष भेष में सजी राधा के चरण दर्शन करते हैं।

प्रतिदिन भूमि छूती साड़ी अथवा लहंगे की मार्यादा में लिपटी रहती है राधा। पर इस दिन के भेष में उनके चरण दिखाई पड़ते हैं। सो उत्सव का अवसर तो हुआ न।

श्रीमद्‌भागवत में राधा का स्पष्ट उल्लेख नहीं मिलता। गोपियों का विवाह अन्य गोपों से हो चुका था। इसलिए कृष्ण के साथ पर काया प्रेम ही सम्भव था। ब्रह्मवैवर्त और देवी भागवत पुराण में राधा का वर्णन है पर विवाह का संकेत नहीं है।

गर्ग संहिता में वृन्दा नाम से विवाह का उल्लेख हुआ है। बाद में वैष्णव भक्तों ने राधा–कृष्ण के प्रेम को अनेक प्रकार से विकसित किया है।
चैतन्य महाप्रभु स्वयं राधा भाव से कृष्ण से प्रेम करते थे। इसीलिए उनका बिरह भाव दारूण हो

उठता है। वे जयदेव, चण्डीदास और विद्यपति के गीत गाते हुए भाव विभोर हो उठते थे। इन सभी कवियों ने परकाया राधा के प्रेम का ही वर्णन किया। इसी भाव में वे–प्रेम की तीव्रता का अनुभव करते थे। कदाचित इसीलिए सुबल वेश में सारी बाधाओं को पार कर के राधा का कृष्ण के पास पहुंचना गौड़ीय सम्प्रदाय में स्मरणीय बन गया हैं। जै जै राधा कृष्ण।

प्रेषक
शिवपूजन प्रसाद कसेरा
डालटनगंज, पलामुसे सम्पर्क सूत्र : 6201807705

आदमीयत के अभाव से अहित

के.जी. श्रीवास्तव

आज अपने देश में ही नहीं अपितु पूरे विश्व में **'जियो और जीने दो'** का सिद्धांत महत्वहीन हो गया है। बढ़ता आतंकवाद भी आदमियत के अभाव की अभिव्यक्ति है। देश में खून खराबा, हत्याएं, बलात्कार, उत्पीड़न, शोषण, भ्रष्टाचार, आदि की बढ़ती घटनाएं भी आदमीयत के अभाव की प्रतीक हैं।

आदमीयत का अभाव अर्थात् मानवता का अभाव, इंसानियत का अभाव। दूसरे शब्दों में कहा जा सकता है :– दया का अभाव, प्रेम का अभाव, संवेदनशीलता का अभाव, विनम्रता का अभाव, अहं से दूरी का अभाव। इन सद्‌गुणों के अभाव से ग्रस्त महिलाओं की बढ़ती संख्या चिंता का विषय है, पर ऐसी औरतों की संख्या उन आदमियों की संख्या से बहुत कम है जिनमें इन सद्‌गुणों का अभाव है।

देश में आए दिन अपार आदमियों और औरतों की उपस्थिति में संत महात्माओं के धार्मिक प्रवचन, धार्मिक आयोजन, घर में और घर के बाहर मंदिरों में पूजा–पाठ, घरों में राम चरित्र मानस, रामायण, गीता, आगम ग्रंथ, गुरु ग्रंथ साहिब, कुरान, बाइबल आदि का पठन करने वालों की उत्तरोतर बढ़ती संख्या के बावजूद आदमियत बढ़ने की बजाय कम हो रही है। सुविख्यात दिगंबर जैन संत श्री विद्यासागरजी ने अपने एक प्रवचन में ठीक ही कहा है कि– "हमारा जीवन धर्म वर्षा होने के उपरांत भी अमृतमय नहीं हुआ है यदि अपने को नास्तिक बताने वाले आदमी में आदमियत है तो वह आस्तिक बताने वाले उस आदमी से अच्छा है जिसमें आदमियत नहीं है। आम आदमी तब तक आदमियत न रखने के बावजूद अधिक अहितकर नहीं है जब तक वह आम आदमी बना रहता है। पर जब आदमी शिक्षक बन जाता है, पुलिसकर्मी बन जाता है या डॉक्टर या सरकारी अधिकारी या नेता या मंत्री बन जाता है और इसमें आदमियत का अभाव बना रहता है तो शिक्षक निर्दयी शिक्षक, पुलिसकर्मी पत्थर दिल पुलिसकर्मी, डॉक्टर हृदय हीन डॉक्टर, सरकारी कर्मचारी, अधिकारी असंवेदनशील कर्मचारी, अधिकारी, नेता या मंत्री, असमाजिक तत्वों को संरक्षण देने वाला और जनसेवा की बजाय संपत्ति संचय की सोच रखने वाला और संपत्ति संचय की दिशा में सतत प्रयास करने वाला नेता या मंत्री बन जाता है। आज व्यवस्था में विकृतियों का मुख्य कारण आदमियत का अभाव भी है, यह कहा जावे तो अनुचित नहीं होगा।

आदमी में आदमियत के अभाव में दिल गौण और मस्तिष्क प्रधान बना हुआ है। दिल की गौणता के कारण आदमी सड़क पर घायल पड़े आदमी की अनदेखी कर पास से निकल जाएगा अथवा उसकी आवश्यक सहायता नहीं करेगा, पर सड़क पर किसी का नोटों से भरा पड़ा बटुआ देखकर फौरन उसे उठा लेगा।

संत कबीर और संत मलूक दास ने अंतःकरण की शुद्धता, प्रेम और दया पर जोर दिया है, कबीर कहते हैं :–

कबीरा मन निर्मल भयो, जैसे गंगा नीर।
पीछे–पीछे हरि फिरे, कहत कबीर कबीर।

कबीर प्रेम की महत्ता के संबंध में कहते हैं:–

"पोथी पढ़ पढ़ जग मुआ, पंडित हुआ न कोय,
ढाई आखर (अक्षर) प्रेम का, पढ़े तो पंडित होय।

संत मलूक दास ने दया की महत्ता बताते हुए इसकी अनिवार्यता बताइ हैं। पढ़िये :–

मलूक दास कहते हैं, मक्का मदीना, द्वारका, बद्री और कैलाश, बिना दया सब झूठ हैं कहें मलूक विचार।

अर्थात् तेरा दिल दया से खाली है तो तेरा मक्का भी झूठा, तेरा मदीना भी झूठा, तेरा बद्रीनाथ, केदारनाथ जाना भी बेकार है। देश में आज मंदिरों में हजारों लीटर दूध मूर्तियों पर चढ़ाया जाता है जो नालियों में बहता हुआ गंदे गढ्डों में गिरता है। एक ओर दूध की ऐसी बर्बादी और दूसरी ओर दूध से वंचित लाखों करोड़ो बालक बालिकाएं। इस बात पर गंभीरता से विचार करने की आवश्यकता है। आपका छोटा बालक दूध से वंचित हो और आपके सामने मंदिरों में लोटों से दूध चढ़ाया जाये तो आप क्या सोचेंगे और क्या कहेंगे।

संत एकनाथ अन्य शिवभक्तों (कांवरियों) के साथ बहुत दूर से जल लाकर शिव शंकर जी को चढ़ाने जा रहे थे। गर्मी में सड़क पर पड़े और तड़पते हुए एक गधे को देखा। इसे देखकर अन्य कांवरिया निकलते जा रहे थे। संत एकनाथजी को गधे पर दया आ गई। उन्होंने शिव शंकर को चढ़ाने वाला जल गधे के मुंह में डाल दिया। गधा थोड़ी देर बाद उठ खड़ा हुआ और वहां से चला गया। साथ चल

रहे कांवरियों में से एक बोला :– "अरे एकनाथजी आपने तो अनर्थ कर दिया। जो जल शिव शंकर जी को चढ़ाया जाना था, वह एक गधे को पिला दिया। कितना बड़ा पाप कर दिया। आप एक पुण्य से वंचित हो गए।" इस बात का अन्य कांवरियों ने भी समर्थन किया।

संत एकनाथ जी मुस्कुराकर बोले:– "भाई मुझे गधे को तड़पते देखकर उस पर दया आ गई। मैंने उसके मुंह में जल डालकर उसके प्राण बचा दिए। ऐसा करके मैंने कोई पाप नहीं, पुण्य का कार्य किया है। कहते हैं उसी रात एकनाथजी को शिव शंकर ने सपने में दर्शन देकर कहा। "एकनाथ तुमने तड़पते गधे के मुंह में जल डालकर उसके प्राण बचाए, तुम्हारे इस कार्य से मैं बहुत प्रसन्न हूं। हाँ, तुम्हें मैं बताता हूं कि वह गधा मैं ही था। मैं तुम्हारी परीक्षा ले रहा था।"

आदमियत की अभिव्यक्ति का एक और उदहारण नीचे प्रस्तुत है:–

"स्वामी विवेकानंद बेलूड़ मठ की स्थापना के लिए धन एकत्रित कर रहे थे। दुर्योग से उसी समय कलकत्ता में प्लेग की महामारी फैल गई। प्रतिदिन हजारों लोग बीमार पड़ते और सैकड़ों मृत्यु के मुंह में चले जाते। ऐसी विकट परिस्थिति में स्वामी जी ने तत्काल मठ निर्माण का कार्य स्थगित कर दिया और मठ निर्माण के लिए एकत्रित राशि से पीड़ितों की सेवा करने में जुट गए। उनके एक सहयोगी ने उनसे कहा– "आप अपने रुपए रोगियों की सेवा में खर्च कर रहे हैं। ऐसे में मठ का निर्माण कैसे होगा ?" स्वामी जी ने उत्तर दिया:– ""मानव सेवा से बढ़कर और कुछ भी नहीं है यदि आवश्यक हुआ तो मठ निर्माण के लिए जो भूमि खरीदी गई है, उसे भी बेच दिया जाएगा, परंतु रोगियों की सेवा में बाधा नहीं आने दी जाएगी। मठ तो फिर कभी बन जाएगा।"

आदमीयत का अर्थ जैसे पूर्व में बताया है और धर्म का सार दोनों एक ही है। हर आदमी में प्रेम, दया, विनम्रता, संवेदनशीलता आदि सद्गुणों का समावेश और अहम से दूरी का अभाव होना चाहिए। अगर ऐसा होता है तो आदमियत का अभाव समाप्त हो जाएगा और किसी को कवि नीरज की इन पंक्तियों को :– "अब तो मजहब कोई ऐसा भी चलाया जाये, जिसमे इंसान को इंसान बनाया जाये", दोहराने की आवश्यकता नहीं होगी।

सेवा से दिल जीता

ओडिशा के कटक शहर स्थित उड़िया बाजार में एक बार प्लेग फैल गया। केवल बापू पाड़ा मोहल्ला इससे बचा हुआ था क्योंकि वहां पढ़े–लिखे लोग रहते थे और वे आसपास की सफाई पर ध्यान देते थे। वहां के कुछ लड़कों ने सफाई अभियान चलाने के लिए एक दल बनाया, जिसमें 10 साल के बच्चे से लेकर 18 साल तक के नौजवान शामिल थे। उस दल का मुखिया था 12 साल का एक बालक। उड़िया बाजार में हैदर अली नाम का एक कुख्यात व्यक्ति रहता था। बापू पाड़ा के लड़के जब उड़िया बाजार में साफ–सफाई करने आते तो हैदर ने उन्हें भगा देता। असल में बापू पार्क के लोगों के प्रति उसके मन में कटुता भरी हुई थी। वहां के वकीलों ने उसे कई बार जेल भिजवाया था। कुछ ही दिनों बाद हैदर की पत्नी और उसके बेटे को भी प्लेग हो गया।

खबर पाते ही अभियान दल का मुखिया वह लड़का उनकी सेवा में जुट गया। हैदर ने उस लड़के से पूछा, 'तुम्हें गुस्सा नहीं आता मुझ पर' लड़के ने जवाब दिया, 'मैं क्यों गुस्सा करूं' हैदर ने कहा, 'मैं तो बापू पाड़ा के लोगों को गालियां देता हूं। सेवा मंडल के लड़कों को शत्रु समझ कर भगा दिया था और तुम मेरी पत्नी और बच्चों की सेवा कर रहे हो। मैं तुम्हारी हिम्मत और उदारता से प्रभावित हुआ, बेटा मुझे माफ कर देना।' बालक ने कहा, 'आप तो हमारे पिता तुल्य हैं। माफी देने का अधिकार हमें नहीं है। हमें तो आपसे आशीर्वाद लेना चाहिए। आपकी पत्नी मेरी मां जैसी हैं और बेटा मेरे भाई जैसा है।'

हैदर अली उस बच्चे की निष्काम सेवा और मधुर वाणी से इतना प्रभावित हुआ कि वह फूट–फूट कर रोने लगा। लड़के ने कहा, 'चाचा आप फिक्र न करें, हमें सेवा का मौका देते रहें।' वह असाधारण बालक आगे चलकर नेताजी सुभाष चंद्र बोस के नाम से विख्यात हुआ।

संकलन– शुभि कश्यप

RNI No. UPHIN/2005/15853 डाक पंजीकरण क्र. SSP/LW/NP-136/2019-21 कैलेण्डर वर्ष 2019–21
सेवा संवाद जनवरी 2020 प्रेषित डाकघर – R.M.S. चारबाग, लखनऊ प्रेषण तिथि– प्रत्येक माह 26 व 30

नेत्रकुम्भ चिकित्सालय में वरिष्ठ नेत्र चिकित्सकों द्वारा नेत्र चिकित्सा

मुद्रक एवं प्रकाशक : श्री जितेन्द्र कुमार अग्रवाल द्वारा भाऊराव देवरस न्यास, सी–91, निरालानगर, लखनऊ (उ.प्र.) के लिए बर्फानी इण्टरप्राइजेज, ए–1, गोविन्दा बिल्डिंग, शाहनजफ रोड, हजरतगंज, लखनऊ, से मुद्रित। सम्पादक : डॉ शिवभूषण त्रिपाठी